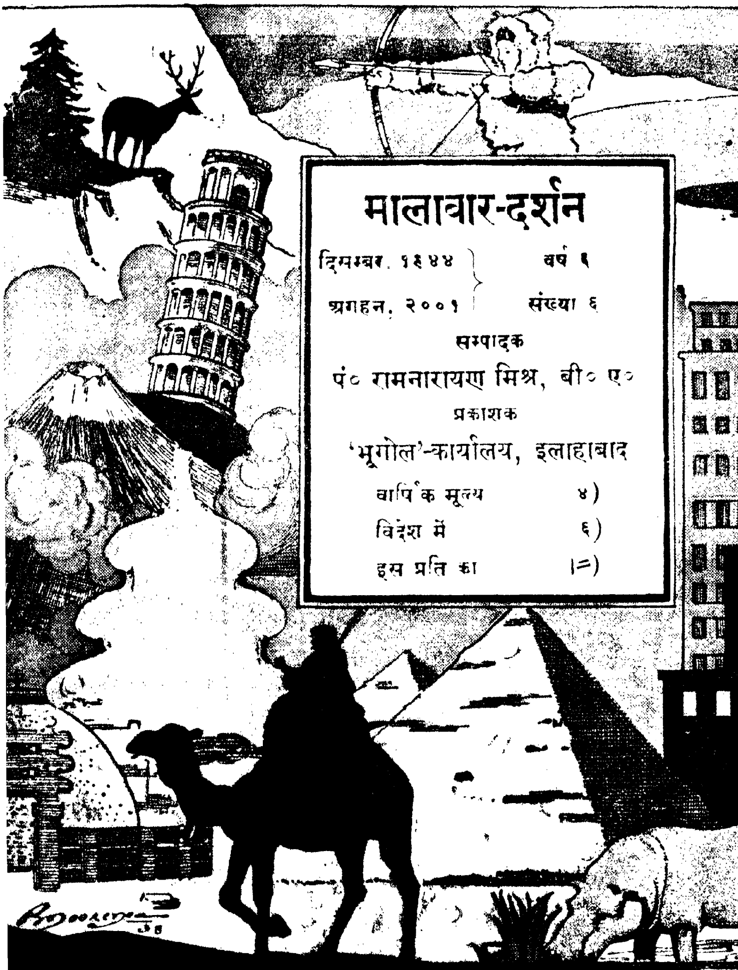
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—६२



मालाबार-दर्शन

दिसम्बर, १९४४ } वर्ष ६
अगहन, २००१ } संख्या ६

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

स्थिति

स्थित, सीमा तथा विस्तार

मालाबार (मद्रास प्रान्त) भारतवर्ष के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह १०°'१५' और १२°'१८' उत्तरी अक्षांशों और ७५°'१४' और ७६°'१५' पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। यह अरब सागर के तट पर १५० मील तक फैला हुआ है। इसके उत्तर में मद्रास प्रान्त का दक्षिणी कनारा जिला है। दक्षिण की ओर कोचीन राज्य है। इसके पश्चिमी बार सूचकी, इसकुर्ग, नीलगिरि और कोयम्बटर से अलग करते हैं। मालाबार की चौड़ाई दक्षिणी सिरे पर पांच मील से कुछ कम है। लेकिन बीच पालघाट तालुका पश्चिमी घाट की सीमा को पार कर पूर्व की ओर फैला हुआ है। यहां पर मालाबार को चौड़ाई ७० मील से अधिक हो गई है।

मालाबार में ९ तालुका हैं—

चिरकाल, कोट्टापम, कुरुम्ब्रानाद, कालीकट, वाइनाद, एर्नाद, वलवनाद, चोन्तानी और पालघाट। कोचीन तालुका में ब्रिटिश कोचीन और १७ छोटे छोटे पाट्टम हैं जो कोचीन और ट्रावनकोर राज्यों में स्थित हैं। तट से दूर स्थित लंका (लक्ष) द्वीप भी मालाबार जिले के अन्तर्गत हैं। इन द्वीपों को छोड़ कर मालाबार जिले का क्षेत्रफल ५,७८७ वर्गमील है। कालीकट इस जिले का केन्द्र स्थान है।

पालघाट, तेलीचेरी, कनानोर, कोचीन, बडगारा और पोनानी दूसरे नगर हैं। मालाबार शब्द का अर्थ है पहाड़ियों

का देश। इसे मलयालम भी कहते हैं। मलयालम का भी वही अर्थ है। कभी कभी इसे केरल भी कहते हैं। केरल में इस जिले के अतिरिक्त कोचीन और ट्रावनकोर के राज्य भी शामिल हैं।

मालाबार में विविध प्रकार का दृश्य है। लत्तद्वीप के समीप चमकीले मूंगे की चट्टानें हैं। यहीं नीला समुद्र इतने वेग से चट्टानों पर टकराता है कि सफेद फेन या झाग उठता रहता है। अनूपों का बंधा हुआ (स्थिर) जल हरा रहता है। इनके ऊपर ताड़ और नारियल के वृत्त खड़े हैं। बोच बीच में बालू बिखरी हुई है। तट से दूर पश्चिमी घाट है। पश्चिमी तट की उष्णार्द्र जलवायु में तरह तरह के पौधे बहुत ही घने उगते हैं। तंग तटीय मैदान में नारियल और कटहल प्रायः पास पास पाये जाते हैं। घर पेड़ों की छाया में ही बने हुये हैं। घरों के आंगन में ऊंचे ऊंचे केले लहलहाते हैं। सब कहीं हरियाली दिखाई देती है। केवल सड़क गेरुआ रंग की दिखाई देती है। तट से घाटों की ओर बढ़ने पर छोटी छोटी पहाड़ियां आरम्भ हो जाती हैं। इनमें कुछ समतल भागों में धान के खेत दूर से जीनेदार दिखाई देते हैं। पहाड़ों के गहरे आखातों में घना जंगल है।

मालाबार की भू-रचना का प्रधान अंग पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणियां हैं। यह सचमुच घाट के समान हैं। तट के पास बहुत नीची पहाड़ियां हैं। भीतर की ओर पहाड़ियों की पंक्तियां क्रमशः ऊंची होती गई हैं। इनकी औसत उंचाई ५००० फुट है। कोई कोई श्रेणियां ८००० फुट से अधिक ऊंची हैं। जिले के उत्तरी सिरे से यह पहाड़ियां तट के समानान्तर चलती हैं।

यह तट से प्रायः २० मील भीतर की ओर हैं। बाबुल माला के पास पहाड़ियां कुछ पूर्व की ओर मुड़ जाती हैं। पाल घाट के चौड़े द्वार (दर्रे) के उत्तर में वे भीतर की ओर हो जाती हैं। पालघाट के दक्षिण तनमाला (दक्षिणी पहाड़ियों) में पहाड़ियां फिर ऊंची उठने लगती हैं। इनकी उंचाई चार-पांच हज़ार फुट हो जाती है। अन्त में विशाल अनामलय पर्वत आ जाता है। मुकुती चोटी ८३८० फुट ऊंची हैं। नीलगिरि ८११८ फुट, गुलिकल ८०९६ फुट और अगिन्द ७८२८ फुट ऊंचे हैं। सर्वोच्च शिखर नीलगिरि की सीमा के पास नीलाम्बुर घाटी के ऊपर उठे हुये हैं। मालाबार प्रधान में बाबुल माला ७६७७ फुट ऊंचा है। यह दूर (समुद्र से दिखाई देता है। वेलारी माला की उंचाई ७३६४ फुट है। ७००० और ४००० फुट के बीच की उंचाई वाली पहाड़ियां असंख्य हैं।

प्रधान श्रेणी से अलग बिखरी हुई कई पहाड़ियां मालाबार की भूमि को विषम बनाती हैं। लेकिन वे अधिक ऊंची नहीं हैं। प्रान्तक्कोद १५९२ फुट ऊंची है। अनंगमाला १३९८ फुट ऊंची है। डेली पहाड़ी ७२९ फुट ऊंची होने पर भी अधिक प्रसिद्ध है। यह कनानोर से २ मील उत्तर में स्थित है।

कहते है मार्कोपोलो यहां आया था। वास्को डि गामा के मल्लाह इसे भली भांति जान गये थे।

मालाबार से पूर्व की ओर जाने के लिये पश्चिमी घाट में कई घाट या दर्रे हैं। पेरम्बादी घाट में होकर कुर्ग को मार्ग गया है। पेरिया और तमारासेरी घाटों में होकर वैनाद और

मैसूर को मार्ग गये हैं। कार्कर घाट में होकर नीलगिरि जिले को मार्ग गया है। इन घाटों के ऊपर सुन्दर सड़कें गई हैं। यह ऊंची सड़कें मालाबार को सर्वोत्तम सड़कों में गिनी जाती है। लेकिन पालाघाट की अपेक्षा इन सड़कों पर होकर व्यापार का बहुत कम माल जाता है। ६०० मील लम्बी पर्वतमाला में २५ चौड़ा पालाघाट सर्वोत्तम द्वार है। यहां कोयम्बटोर के लिये रेल और सड़क का मार्ग है। यहीं होकर अरब सागर की भावभरी हवायें कोयम्बटोर के सूखे मैदान में वर्षा कर जातो हैं।

नदियां

कावेरी की तीन (कब्बानी, रामपुर और भवानी) सहायक नदियों को छोड़कर मालाबार की शेष सभी नदियां अपना पानी अरब सागर में गिराती हैं। लेकिन इस ओर बहने वाली नदियां बहुत छोटी हैं। केवल पोनानी नदी १०० मील से अधिक लम्बी है। वर्षा ऋतु के ३ महीनों में इनमें भारी बाढ़ आती है। शेष ९ महीनों में इनमें इतना कम पानी रहता है कि वे समुद्र तट की बलुई दीवार को काट कर अपना जल समुद्र में गिराने में असमर्थ हो जाती है। इस प्रकार समुद्र के पीछे की ओर असंख्य अनूप बन गये हैं। केवल दक्षिण की ओर तीरूर से ट्रावनकोर तक सुंदर जल मार्ग है। वालार पट्टनम नदी चिरियाकल तालुका से निकलती है। यह मालाबार की सब से लम्बी नदी नहीं है। फिर भी यह अरब सागर में सब से अधिक जल गिराती है। यह पेरिया माला के ढालों से वैनाद के उत्तरी-पश्चिमी कोने से निकलती है। यह ७० मील लम्बी है।

वालार पट्टनम नगर के पास यह समुद्र में गिरती है। इसी से इसका यह नाम पड़ा। यह घाट के बन की लकड़ी बहाने के काम आती है। तट की ओर से नमक और मछलियों से भरी हुई छोटी छोटी नावें ऊपर की ओर जाती हैं। ऊपरी भागों से काली मिर्च लाद कर यह नावें तट की ओर लौटती हैं। इस नदी के चौड़े और गहरे मुहाने से वालार पट्टनम या बालिया-पाटम का बन्दरगाह बनता है। उत्तर की ओर इसमें तालीप-रम्बा नदी गिरती है। सुलतान नहर इस अनूप को देली और नीलेश्वर नदी से मिलाती है। अंजर कंडी और माही नदियां काली मिर्च के प्रदेश में बहती हैं। मुहाने से कुछ मील उत्तर तक इनमें नावें चल सकती हैं। मुहाने से कालीकट और कुछ अन्य स्थानों तक नहरों का मार्ग है। बेपुर या चालियर नदी ९६ मील लम्बी है। पहले इसकी बालू में सोने के कण बहुत इकट्ठे किये जाते थे। नीलाम्बुर के ऊपर इसकी तीनों शाखायें इसमें मिल जाती हैं। बीच वाली शाखा पोनपुज या स्वर्ण नदी कहलाती है। इसकी पश्चिमी शाखा या चालियर नदी चेलादि घाट (दर्रे) के पास सुंदर प्रपात बनाती है। कालीकट से ६ मील दक्षिण की ओर बेपुर के पास यह समुद्र में गिरती है। इसी से इसका नाम बेपुर नदी पड़ा। इस नदी में बन की बहुत सी इमारती लकड़ी बह कर आती है और मुहाने के पास इकट्ठी की जाती है। कदलुन्दी नदी ७५ मील लम्बी है और एक धारा द्वारा बेपुर नदी से मिली हुई है। पोनानी नदी अरब सागर की ओर गिरनेवाली मालाबार की सब से बड़ी नदी है। यह अनामलय पर्वत से निकलती है और १५६ मील लम्बी है।

ग्रीष्म ऋतु में यह नदी ऊपरी भागों में प्रायः सूख जाती है। पर वर्षा ऋतु में भरी हुई नावें मुहाने से काफी दूर ऊपर की ओर पहुँच जाती है। पोनानी बन्दरगाह के पास यह समुद्र में गिरती है। यह कई स्थानों से नहरों द्वारा जुड़ी हुई है।

कोचीन नदी वास्तव में उस भीतरी जल का द्वार है जो कोचीन और ट्रावनकोर की पहाड़ियों से निकलकर भीतर की ओर इकट्ठा हो जाता है। यह ११ फुट से अधिक गहरा है। इसमें होकर बड़ी बड़ी नावें आ सकती हैं।

मालाबार का समुद्रतट उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर चला गया है। यह १५० मील लम्बा है। तट के पास पानी उथला है। कोचीन को छोड़ कर इस ओर कोई अच्छा बन्दरगाह नहीं है। दक्षिणी-पश्चिमी तूफानी मानसूनी हवाओं के चलने के समय बहुत कम स्थानों में इस ओर जहाजों को शरण मिल पाती है। तट के पास गहरे पानी की कमी है। तट से तीस-चालीस मील समुद्र की ओर कीचड़ से भरी हुई तली क्रमशः गहरी होती हुई ६०० फुट तक गहरी हो पाई है। इसके आगे समुद्र की गहराई अचानक ६००० फुट होगई है। फिर भी इस ओर समुद्र जल के भीतर छिपी हुई चट्टानों का प्रायः अभाव है। केवल कोट्टा नदी के मुहाने के सामने समुद्र-जल में बलिदान चट्टान है। कालीकट, तेलीचेरी और तांगासेरी के सामने मूंगे की दीवारें (चट्टानें) हैं। दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी हवाओं के समय तटीय धारा दक्षिण से उत्तर को चलती है। शेष महीनों में यह उत्तर से दक्षिण की ओर आती है। मई से अक्तूबर तक यह धारा बड़ी प्रबल हो जाती है। कालीकट के

मालाबार-दर्शन

उत्तर में तट पर डेली (पहाड़ी को छोड़कर) नीचे टीले हैं। उनके नीचे बालू है। स्थान स्थान पर समुद्र की लहरों ने इस तट को काट दिया है। कालीकट के दक्षिण में तट रेतीला है। इस बालू को समुद्री धाराओं ने इकट्ठा कर दिया है। कहीं कहीं पर नदियों ने अपने मुहाने पर मिट्टी एकत्रित की है। अब से २००० वर्ष पहले क्रांगानोर से किलन तक जहाँ इस समय जल है वहां पहले स्थल था। समुद्र धीरे धीरे स्थल को डुबाता जा रहा है। कई सौ वर्ष पहले जहां अरबी शेख (ममू कोया) का मकबरा था वहाँ अब समुद्र का जल है। लंका द्वीप या लक्ष द्वीप मालाबार के तट से कहीं १३९ मील और कहीं २१८ मील दूर है। इस द्वीप समूह के चार द्वीपों में मनुष्य बसे हुये हैं। १० द्वीप निर्जन हैं। यह द्वीप समूह उत्तर से दक्षिण की ओर अर्द्धचन्द्राकार फैला हुआ है। इनके पश्चिम या उत्तर पश्चिम की ओर मूंगे की दीवार ने समुद्र जल को घेर कर उथल अनूप बना दिया है। यह सब मूंगे के द्वीप हैं। इनका कोई भी स्थान समुद्र-तल से ३० फुट से अधिक ऊंचा नहीं है। यह सब कहीं घनी वनस्पति से ढके हुये हैं। अच्छे भागों में नारियल, कटहल और नींबू के पेड़ लगे हुये हैं। मिनीकाय द्वीप अधिक दक्षिण की ओर कालीकट से २४३ मील दूर है। इसके पास ही विरिं-गिली द्वीप है जहां बाहर से आनेवाले बीमार यात्री कुछ समय तक रोक लिये जाते हैं। इसका दृश्य लक्ष द्वीप के समान है। लेकिन यहां के निवासी महल भाषा बोलते हैं। ,यह माल द्वीप का अंग है।

कोट्टा नदी के मुहाने से कुमारी अन्तरीप तक कहीं कहीं

कीचड़ से भरे हुये किनारे मिलते हैं। लेकिन यह किनारा सुरक्षित है। तूफान में भी यहां जहाज़ लंगर डाल सकते हैं। ट्रावनकोर में एलेप्पी और कोचीन के उत्तर में नारकल कीचड़ के प्रसिद्ध किनारे हैं। कालीकट और पान्तालाइनी के समीप प्रधान मालाबार में कीचड़ के किनारे मिलते हैं। शान्त जल में थाह लेने पर ही कीचड़ की तली का पता लगता है। मानसूनी हवाओं के चलने पर तली की कीचड़ में हलचल मच जाती है। इस कीचड़ का रंग गहरा हरा होता है। इसके कण बहुत बारीक होते हैं। छूने में यह तेल के समान चिकनी मालूम होती है। इस कीचड़ की एक विशेषता यह है कि यह एक स्थान पर स्थिर नहीं रहती। यह धाराओं के साथ धीरे धीरे अपना स्थान बदलती रहती है। एलेप्पी की कीचड़ ज्वालामुखी के समान कभी कभी ऊपर उछलती रहती है। इसमें प्राय: मरी हुई मछलियां, जड़े और लकड़ियां मिली रहती हैं।

मिट्टी

भू-रचना के अनुसार मालाबार कड़ी मिट्टी (लेटराइट) का पठार है। केवल तंग तटीय प्रदेश में नई कछारी तहें हैं। यहां चिकनी मिट्टी और नदी द्वारा लाई हुई बालू का मिश्रण है। कोचीन और पोनानी तालुकों को छोड़ कर शेष भागों में लाल मटियार की अधिकता है। जिन भागों में मानसूनी बाढ़ आ जाती है।अथवा जहां उथली झीलें या अनूप हैं। वहां चिकनी मिट्टी की अधिकता है। चिकनी मिट्टी के प्रदेशों में धान अच्छा होता है। रेतीले नमकीन भाग नारियल के पेड़ों के लिये अनुकूल होते हैं। यहां की सफेद या कुछ काली चिकनी

मिट्टी बड़ी उपजाऊ होती है। इस चिकनी मिट्टी में लोहे और पोटाश के कण मिले रहते हैं। लोहे का अंश मिलने से इसका रंग कुछ लाल हो जाता है। जिस मिट्टी में लोहे के कण नहीं होते हैं अथवा कम होते हैं उसका रंग भूरा या कुछ पीला रहता है।

वैनाद पठार और नीलाम्बुर घाटी में सोना पाया जाता है। पठार और मैदान में लोहा भी बहुत है। घर बनाने का पत्थर सब कहीं मिलता है। कुछ स्थानों में माइका (अभ्रक) और कोयला भी पाया जाता है।

जलवायु

मालाबार में तापक्रम को विषमता का प्रायः अभाव है। दिन और रात के तापक्रम तथा सरदी और गरमी की ऋतु के तापक्रम में बहुत कम अन्तर रहता है। अधिक से अधिक गरम महीने का औसत तापक्रम केवल ९१ अंश फारेन हाइट रहता हैं। टंडी रात्रि के समय अल्प तापक्रम ७० अंश फारेन हाइट से अधिक नीचा नहीं होता है। हवा में नमी होने के कारण ग्रीष्म ऋतु का कम तापक्रम भी असह्य हो जाता है। समुद्र-तट की अपेक्षा तीन चार हजार फुट वैनाद पठार की जलवायु अधिक ठंडी है। यहां सरदी की ऋतु का तापक्रम ६० अंश और गरमी का ८४ अंश हो जाता है। अक्टूबर से फर्वरी तक यहां की जलवालु बड़ी सुंदर रहती है। यहां की हवा में वर्षा ऋतु में ९० प्रतिशत से ऊपर आर्द्रता हो जाती है। खुश्क ऋतु में भी ७० प्रतिशत से कम नहीं रहती है। यहां हवा प्रायः उत्तर-पश्चिम

की ओर से चलती है। इस भाग की बनावट इस प्रकार है कि दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के समय भी हवा की दिशा उत्तर-पश्चिम रहती है। सितम्बर महीने में हवा का वेग प्रतिघंटा ७० मील तक हो जाता है। नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी और फर्वरी महीनों में हवा का वेग प्रतिघंटा ४० मील से कम रहता है। वर्ष के शेष महीनों में हवा का वेग प्रति घंटा ४० मील से ऊपर रहता है।

मानसूनी वर्षा जून मास में आरम्भ होती है। पालघाट के समीप इसका वेग बहुत बढ़ जाता है। अक्टूबर मास से स्थल की ओर से हवायें चलती हैं। दो पहर से कुछ पूर्व हवा प्रायः शान्त रहती है। दोपहर के बाद दो तीन बजे के समय समुद्र की ओर से शीतल हवा चलती है। गरमी की ऋतु में स्थल की ओर से आने वाली गरम हवायें वनस्पति को प्रायः झुलसा देती हैं। मालाबार में प्रबल वर्षा होती है। औसत वार्षिक वर्षा ११७ इंच होती है। पालघाट में ७८ इंच पानी बरसता है। वापीतीरी में १६९ इंच वर्षा होती है। वैनाद में पश्चिमी घाट के कुछ ढालों पर वर्ष में ३०० इंच तक पानी बरस जाता है। तामारसेरी घाट (दर्रे) के पास तगरपादी में एक वर्ष ३६० इंच वर्षा हुई। जनवरी, फर्वरी और मार्च यहां के खुश्क महीने हैं। अप्रैल मास में पश्चिमी घाट के कुछ स्थानों में बादलों का गर-जना सुनाई देने लगता है। मई के अन्त तक काले बादल कई भागों में पहुँच जाते हैं। बिजली बार बार चमकती और गरजती है। जून में प्रबल वर्षा होने लगती है। अगस्त में वर्षा कम हो जाती है। सितम्बर में वर्षा ऋतु समाप्त हो जाती है।

हवा स्थल की ओर से चलने लगती है। दिसम्बर तक लौटने वाली उत्तरी-पूर्वी मानसूनी हवाओं से कुछ वर्षा हो जाती है। इसके पश्चात् शुष्क ऋतु आरंभ हो जाती है। उत्तरी-पूर्वी मानसूनी हवायें किसी किसी वर्ष कुछ भी पानी नहीं बरसातीं लेकिन दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी हवाओं से वर्षा अवश्य होती है। प्रबल वर्षा से मालाबार में बाढ़ प्रायः आ जाती है। लेकिन वर्षा के अभाव से दुर्भिक्ष का यहां बहुत कम डर रहता है। फिर भी यहां सब लोगों के लिये पर्याप्त भोजन नहीं होता है और बहुत सी भोजन सामग्री बाहर से आती है। कभी कभी यहां भूचाल भी आ जाते हैं।

वनस्पति

मालाबार के भिन्न भिन्न भागों में तापक्रम और मिट्टी भिन्न भिन्न प्रकार की है। वर्षा कहीं भी ५० इंच से कम नहीं होती है। कहीं कहीं ३०० इंच से ऊपर वर्षा होती है। इसी से यहां वनस्पति भी कई प्रकार की है। पश्चिमी घाट के ऊपरी भागों में शोला बन है। यह पेड़ बड़े ऊंचे होते हैं और सदा हरे भरे रहते हैं। तट के समीप नारियल, कटहल, काजू और आम आदि के पेड़ उगते हैं। बगीचों में केला, शरीफा, अमरूद, पपीता, अरारोट, अनन्नास और दूसरे पेड़ों की भरमार है। भीतर की ओर पालघाट में इमली, ताड़ और खुश्क भागों में दूसरे पेड़ मिलते हैं। पश्चिमी घाट की तलहटी से पांच मील भीतर की ओर एकदम सघन बन है। उत्तरी भाग में काली मिर्च की अधिकता है। इसकी लतायें कई प्रकार के पेड़ों के ऊपर चढ़ जाती हैं। फूल अनेक प्रकार के होते हैं।

पशु

उष्णार्द्र जलवायु गाय बैल के लिये अनुकूल नहीं होती हैं। भैंस के लिये आर्द्र जलवायु बड़ी अच्छी होती है। इसी से यहां बोझ ढोने का अधिकतर काम भैंसों से लिया जाता है। देशी गाय बैल बहुत छोटे और कमजोर होते हैं। अच्छे बैल कोयम्बटोर और मैसूर से मंगाये जाते हैं। जानवरों को प्रायः धान का प्याल खिलाया जाता है। अधिकतर जानवर बाहर चरने के लिये छोड़ दिये जाते हैं। पालघाट के खुश्क भागों को छोड़कर भेड़ अन्य भागों में नहीं होतीं। लेकिन बकरियां मालाबार के सभी भागों में पाई जाती हैं। दक्षिणी पानानी के सिरियन ईसाई रकुऊ बहुत पालते हैं। उत्तरी वैनाद के जंगलों में जंगली हाथी इस समय भी पाये जाते हैं। प्रति वर्ष हाथी पकड़े जाते हैं और पालतू बना लिये जाते हैं। पालतू हाथी लट्ठे ढोते हैं। जंगली हाथी पश्चिमी घाट के अन्य भागों और नीलाम्बुर घाटी में भी पाये जाते हैं। कभी कभी जंगली हाथी पड़ोस में रास्ता चलना बंद कर देते हैं। गरमी की ऋतु में हाथी ऊंचे भागों में चले जाते हैं। वर्षा ऋतु में वे नीचे उतर आते हैं। यहां जंगलों में चीता और तेंदुआ भी पाया जाता है। जंगली सुअर धान के खेतों को बड़ी हानि पहुँचाते हैं। जंगली बकरे भी बहुत हैं। बन्दर सब कहीं मिलते हैं। जंगली कुत्ता, खरगोश, गिलहरी आदि कई प्रकार के पशु भी बहुत हैं। पक्षी बड़े सुंदर पंख वाले होते हैं। इनकी प्रायः ५०० जातियां हैं। समुद्र अनूपा और नदियों में मछलियां बहुत हैं।

मालाबार-दर्शन

कृषि

मालाबार के आर्द्र भागों में धान की फसल प्रधान है। कुछ खेतों में धान की दो फसलें होती हैं। जब पहली फसल कटती है तो भी इन खेतों में पानी भरा रहता है। धान का ऊपरी भाग काट लिया जाता है। पहली फसल कली कहलाती है और भूमि के भीगते ही अप्रैल या मई में बो दी जाती है। यह फसल सितम्बर से काटी जाती है। इसके बाद दूसरी (धगबन) फसल की तैयारी होती है। यह जनवरी महीने में कटती है। अत्यन्त अच्छे खेतों में (जहां पानी सदा बना रहता है) गरमी की ऋतु की तीसरी मधा पंजा फसल भी तैयार कर ली जाती है। साधारणतया दो फसलें काटी जाती हैं। कुछ खेतों में केवल एक फसल होती है।

त्रिचूर या एनामकल झील की तली की खेती विशेष उल्लेखनीय है। वर्षा के समाप्त होने पर इस झील में दस बारह फुट पानी हो जाता है। इस झील का कुछ भाग पोनानी और कुछ कोचीन में है। यह बीस वर्ग मील है। वर्षा समाप्त होने पर रहट और पम्पों द्वारा इसका पानी बहा दिया जाता है। नवम्बर में खेती आरम्भ होती है। कभी कभी दूसरे वर्ष की वर्षा की बाढ़ को रोकना असम्भव हो जाता है और फसल नष्ट हो जाती है। तट के समीप खारे पानी वाले अनूपों के पड़ोस में कैवाद खेती है। खारे पानी को अलग रखने के लिये मिट्टी के ऊंचे टीले बना दिये जाते हैं। वर्षा के आरम्भ होते ही इन पर बीज बो दिये जाते हैं। आगे चल कर वर्षा के मीठे पानी की कमी

नहीं रहती है। कभी कभी ज्वार द्वारा समुद्र का खारा पानी फसल को नष्ट कर देता है।

यहां ककड़ी, तरबूज़, मिर्च. बैंगन और तरह तरह की तरकारियां होती हैं।

खुश्क भागों में ज्वार, बाजरा, रागी. समई और दूसरी फसलें होती हैं। पहाड़ी भागों में जंगल को काटकर या जला कर खेती करने की प्रथा है। इसे चूनम कहते हैं। बन का जो भाग इस प्रकार साफ कर लिया जाता है उसमें कुछ वर्ष तक खेती होती है। यहां जंगली जानवरों से रखवाली करने के लिये खेत के चारों ओर आड़ (घेरा) करना पड़ता है।

मालाबार की एक मूल्यवान फसल अदरख है। यह प्रत्येक भाग में होती है। अर्नाद तालुका में सब से अधिक और सब से अच्छी अदरख होती है। घास और कंकड़ पत्थर को साफ करके खेत छः बार जोते जाते हैं। मई में अदरख बोई जाती है। यह एक एक फुट की दूरी पर क्यारियों के छः अंगुल गहरे गड्ढों में गाड़ दी जाती है। इनमें गोबर की खाद दी जाती है। डेढ़ डेढ़ महीने बाद मिट्टी चढ़ाई जाती है। धान (दिसम्बर या जनवरी) मास में फसल तैयार हो जाती है और आलू की तरह खोद ली जाती है। अदरख को सुखा कर सोंठ बना लेते हैं। अदरख से सोंठ चार पांच गुनी अधिक महँगी होती है। अदरख को सुखाने के लिये कई बार चूने के पानी में धोना और धूप में सुखाना पड़ता है। फिर भट्टी में भी गरम करके सुखाते और सफेद करते हैं।

मालाबार-दर्शन

मलाबार के बगीचों में नारियल, सुपारी, आम, साबूदाना, इमली आदि कई प्रकार के पेड़ मिलते हैं। नारियल का पेड़ नदियों के मुहानों और अनूपों के समीप नमक मिली हुई कछारी मिट्टी में बहुत अच्छा होता है। इससे खोपरा, तेल, रेशा, रस्सी आदि कई मूल्यवान चीजें मिलती हैं। नारियल से मालाबार को प्रति वर्ष प्रायः पांच करोड़ रुपये का लाभ होता है। नारियल का बग़ीचा तैयार करने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। प्रबल वर्षा में मिट्टी को बह जाने से रोकने के लिये गहरी खाई और ऊंची मेंड़ बनानी पड़ती है। निचले पहाड़ी भागों में नारियल के वृक्षों को लगाने के लिये अधिक खाद देनी पड़ती है। पौधे लगाने के लिये पुराने पेड़ों के पूरे पके हुये नारियल फल चुने जाते हैं। कुछ दिनों तक इन्हें धूप में पड़ा रहने देते हैं। जिससे फल के भीतर का जल सूख जावे। फिर नारियल के इन फलों को १० दिन से लेकर ३० दिन तक पानी में भिगोते हैं। फिर इनको अच्छी मटियार भूमि में इस प्रकार गाड़ते हैं कि इनका सिरा ऊपर कुछ खुला रहता है। इस दशा में इन्हें प्रतिदिन सींचना पड़ता है। तीन महीने बाद इनमें अंकुर फूटता है। छः नौ या बारह महीने बाद वर्षा के आरम्भ होने पर वे गढ़ों में लगा दिये जाते हैं। कछारी भूमि में यह गढ़े २ फुट गहरे और दो फुट घेर (व्यास) वाले होते हैं। यह गढ़े ४० फुट की दूरी पर खोदे जाते हैं। दीमक से बचने के लिये बीज के नीचे राख बिछा दी जाती है। इसमें एक मुट्ठी नमक भी मिला दिया जाता है। पहले तीन वर्ष तक (गरमी में) पौधे की बड़ी देख भाल की जाती है। इसमें गोबर और पत्तियों की खाद दी जाती है। बड़े

हो जाने पर वर्षा के पूर्व नारियल के बगीचे को प्रति वर्ष जोत दिया जाता है और उसमें कम गहरी खाईं बना दी जाती है। जड़ों के पास इसमें खाद भर देते हैं। बीज और मिट्टी के अनुसार नारियल के पेड़ शीघ्र या देर से फल देने लगते हैं। औसत से नारियल का पेड़ चौथे साल फल देने लगता है और ४० वर्ष तक फल देता रहता है। वृक्ष अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में कम फल देता है। औसत से एक पेड़ में ५५ फल लगते हैं। एक एकड़ में प्रायः ४० पेड़ होते हैं। अतः प्रति एकड़ २२०० फल प्रति वर्ष मिलते हैं। पोनाना और कोचीन के पेड़ों में मछलियों की खाद दी जाती है। वहां एक पेड़ में १०० से ऊपर फल लगते हैं। यहां एक एकड़ में ६० और १०० पेड़ तक लगाये जाते हैं। नारियल के फल को पकने में आठ दस महीने लगते हैं। फल वर्ष में पेड़ से ६ या आठ बार तोड़े जाते हैं। रस्सी का फंदा डालकर इस रस्सी के सहारे पेड़ के ऊपर चढ़ने में बड़ी सावधानी करनी पड़ती है। फल तोड़ने वालों को प्रति पांच पेड़ों के फल तोड़ने पर एक नारियल (फल) मिलता है। नारियल के पौधे को उगाते समय चूहे और गिलहरी से भी बचाना पड़ता है।

कटहल—का पेड़ चिकनी मिट्टी में अच्छा बढ़ता है। बलुई भूमि में यह नाटा रह जाता है। नारियल की अपेक्षा यह दुगुनी भूमि घेरता है। यहां के लोगों में एक कहावत है कि कटहल के पेड़ों को इतनी दूर लगाना चाहिये कि बन्दर एक पेड़ से छलांग कर दूसरे पेड़ पर न पहुँच सके। पर कटहल के पेड़ प्रायः नारियल या सुपारी के पेड़ों के बीच में लगाये जाते

हैं। आठवें वर्ष पेड़ फल देने लगता है। प्रति वर्ष एक पेड़ में २० या तीस फल लगते हैं। पेड़ १०० वर्ष तक फल देते रहते हैं। कोई कोई पेड़ ४०० वर्ष तक जीवित रहते हैं।

सुपारी के पेड़ नदियों की घाटियों में भीतरी ज़िलों में अच्छे उगते हैं। पके फल दिसम्बर या जनवरी मास में तोड़े जाते हैं। पौधे लगाने के लिये फलों को गाय के गोबर में लपेट कर तीन दिन तक धूप में सूखने देते हैं पौधे एक दूसरे से कुछ इंच की दूरी पर क्यारियों में लगाये जाते हैं। इनमें प्रति दिन पानी दिया जाता है। धूप से बचाने के लिये पौधों पर पत्तियों की छाया कर देते हैं। दो महीने में अंकुर फूटता है। दूसरे वर्ष वर्षा आरम्भ होते ही क्यारियों में पौधे लगा दिये जाते हैं। लगाते समय गोबर और पत्तियों की खाद डाली जाती है। तीन महीने बाद फिर खाद दी जाती है। सुपारी के बगीचे को प्रतिवर्ष जोतना पड़ता है। खाइयों में खाद भर दी जाती है। प्रायः इन पेड़ों पर पान की लतायें चढ़ा दी जाती हैं। सातवें आठवें वर्ष सुपारी के बृक्ष में फल लगते हैं। ३०० वर्ष तक बृक्ष फल देता रहता है। एक पेड़ में १५० से ५०० तक फल उगते हैं। एक एकड़ में प्रायः ४५० पेड़ होते हैं। अतः एक एकड़ में प्रायः १ लाख फल लगते हैं। जनवरी, फर्वरी और मार्च मास में वर्ष में तीन बार फल तोड़े जाते हैं। सुपारी को प्रायः पान के साथ खाते हैं।

काली मिर्च का जन्म स्थान मालाबार है। यह अधिकतर मालाबार के तीन उत्तरी तालुकों में उगती है। सर्वोत्तम काली-मिर्च चिरकाल के उत्तर में उगती है। काली मिर्च की लतायें

बगीचे में कटहल, आम आदि दूसरे ऊंचे पेड़ों के नीचे जहां तहां लगा दी जाती हैं। पश्चिमी घाट की तलहटी की दुमट भूमि (चिकनी मिट्टी और बालू के मिश्रण) में अच्छी होती है। काली मिर्च की लता के लिये १०० इंच से ऊपर वर्षा की आवश्यकता पड़ती है। २० जून से ५ जुलाई तक काली मिर्च की लतायें फूलती हैं। इस समय प्रबल वर्षा की आवश्यकता होती है। लेकिन फल तोड़ने से पहले अधिक वर्षा होने से दानों को हानि पहुँचती है। भीतर की ओर काली मिर्च को लगाने के लिये जल्दी उगने वाले मुरिक्कू धान और उर्द के साथ बो देते हैं। फसल कटने पर इनकी लकड़ियां इकट्ठी कर ली जाती हैं। पहाड़ी भागों में भूमि को समतल कर जीनेदार खेत बना लिये जाते हैं। वर्षा के आरम्भ होने पर मुरिक्कू के पौधों को दो-दो गज की दूरी पर लगा देते हैं। जब इनकी जड़ मजबूत हो जाती है तब काली मिर्च के पूरी उगी हुई तन्दुरुस्त लता के टुकड़े इनके पास लगा दिये जाते हैं। मुरिक्कू की जड़ बहुत गहरी नहीं जाती है। आंधी में गिरने से रोकने के लिये इसे छांट कर छोटा कर दिया जाता है। काली मिर्च की लता के डेढ़ हाथ लम्बे टुकड़े लगाये जाते हैं। यह दो फुट गहरे गाड़े जाते हैं। एक एक खानों पर एक साथ पांच छः लतायें चढ़ जाती हैं। टुकड़ों को गाड़ते समय किसी प्रकार की खाद नहीं दी जाती। जुलाई, अगस्त और फिर अक्तूबर नवम्बर में भूमि को गोड़ कर मिट्टी चढ़ा देते हैं। लतायें तेजी से बढ़ती हैं। कुछ समय में वे एक फुट ऊँची हो जाती हैं। इन्हें खम्भे या पेड़ से बांध देते हैं। गरमी में जड़ के पास पत्तियों की छाया कर

दी जाती है। कहीं कहीं सुपारी के पेड़ों पर लतायें चढ़ाई जाती हैं तीसरे चौथे वर्ष लताओं में फल लगने लगते हैं। २० वर्ष तक इसमें फल लगते रहते हैं। जून में फूल फूलते हैं। अगस्त या सितम्बर मास में दाने लगते हैं। जनवरी से मार्च तक मिर्च के दाने इकट्ठे किये जाते हैं इनके फूल और फल बड़े नाजुक होते हैं अतः लताओं को बांधने और गुच्छों को तोड़ने के लिये बांस की सीढ़ी लगा ली जाती है। काली मिर्च के गुच्छे तोड़ने वाले आदमी गर्दन में एक टोकरी लटकाये रखते हैं गुच्छों (चित्तल) को वे इन्हीं टोकरियों में रख लेते हैं अच्छी लता से प्रति वर्ष दस सेर काली मिर्च तोड़ी जाती है। साधारण लता से तीन चार सेर काली मिर्च तोड़ी जाती है।

पान

मालाबार के कई भागों में पान होता है। सर्वोत्तम पान आदि दुमट भूमि में होता है। पान की लताओं को सुपारी के वृक्षों पर चढ़ाते हैं। इससे सुपारी के वृक्ष और पान की लताओं की एक साथ सिंचाई हो जाती है। वर्ष में छः महीने सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। गरमी की ऋतु में हर चौथे दिन पानी देना पड़ता है। अक्तूबर में पुरानी लता को लपेट कर सुपारी की जड़ के पास गाड़ देते हैं। केवल ऊपरी सिरा दिखाई देता रहता है। फर्वरी में यह आठ फुट ऊँची हो जाती है नये पान तोड़ने के लिये फिर तैयार हो जाते हैं। महीने में दो बार पान तोड़े जाते हैं। अक्तूबर मास तक इसी प्रकार तुड़ाई जारी रहती है।

कहवा

कहवा के नये ढंग के बगीचे अठारहवीं शताब्दी में आरम्भ हुये। कहवा के पौधों को छाया की आवश्यकता होती है इसी से इन्हें बड़े पेड़ों के नीचे लगाया जाता है। कहवा का फूल छोटा और सुफेद होता है। पहले गहरे हरे दाने लगते हैं। पकने पर वे फीके लाल और गहरे लाल हो जाते हैं। ऊपरी छिलके के नीचे गूद के बीच में दाना होता है। पकते ही फल तोड़ लिये जाते हैं। फिर गूदे से दाने को अलग कर सुखा लिया जाता है। फिर इनको साफ करने के लिये तटीय भागों में भेज देते हैं। यहीं मशीनों से काम लिया जाता है। फिर इन्हें धूप में सुखा कर सूप से फटकते हैं। भिन्न भिन्न कोटि के दानों को अलग रक्खा जाता है। फटकने का काम स्त्रियां करती हैं।

सिनकोना

सिनकोना वृक्ष का जन्म स्थान दक्षिणी अमरीका पीरू देश है। इसकी छाल से कुनैन बनती है। कुनैन शब्द वास्तव में "क्विना क्विना" (छालों की छाल) का अपभ्रंश है। १६४० ई० में पीरू के वायसराय की पत्नी सिनकोन की काउंटेससे क्विनैन को योरुप में पहुँचाया। उन्हीं के सम्मानार्थ इस वृक्ष का नाम सिनकोना पड़ गया। जब वृक्ष पन्द्रह वर्ष का हो जाता है तब जड़ के पास की छाल छुड़ा ली जाती है। फिर यह नीलगिरि के कारखाने या योरुप को भेज दी जाती है।

चाय

१८९२ से कहवा के बहुत से बगीचों में चाय उगाने का

काम होने लगा। तब से चाय की खेती बढ़ती ही गई। अधिकतर चाय वैमाट के पहाड़ी ढालों पर होती है। चाय की तीन जातियां होती हैं। शुद्ध चीनी चाय में पत्तियां कम लगती है। दूसरी जाति की चाय का आदि स्थान आसाम है। तीसरी जाति की चाय दोनों के मेल से बनी है। इसमें चीनी चाय से दुगुनी पत्तियां लगती हैं। पत्तियां तोड़ने का काम साल भर होता रहता है। कोमल पत्तियां तोड़ कर कारखाने में पहुँचाई जाती है। यहां वह तख्तों पर फैला दी जाती है। जब यह इतनी मुरझा जाती हैं कि मोड़ने से नहीं टूटती है तब यह मशीन द्वारा मोड़ ली जाती हैं। मुड़ी हुई पत्तियां एक अँधेरे और गीले कमरे में पतली-पतली बिछा दी जाती है यहाँ रखने से इनमें एक प्रकार की गन्ध हो जाती है। इसके पश्चात् इन्हें बड़ी तश्तरियों में रख कर सिरक्को नामी मशीन से गरम कर लेते हैं। यह मशीन चाय से भरी हुई तश्तरियों के बीच में गरम हवा छोड़ती रहती है। गरम और कड़ी हो जाने के बाद चाय को मशीनों द्वारा फटक कर अलग कर लेते हैं। रंग और बनावट के अनुसार चाय के पुष्पित पेको, नारंगी पेको, पेको, टूटी पेको, सूचांग, टूटी सूचांग, और कांगी नाम के वर्गों में बांट लेते हैं।

रबर

रबर के पेड़ १८७८ में पहले पहल मालाबार में लगाये गये। रबर का आदि स्थान एमेजान नदी की घाटी पारा और सियारा दो प्रकार के पेड़ प्रधान है। तामारसेरी घाट (दर्रे) की तल-

हटी में रबर का पहला बगीचा तैयार किया गया। कुछ रबर के पेड़ कहवा के बगीचों में कहवा के पौधों पर छाया रखने के लिये लगाये गये। नीलाम्बुर घाटी और पश्चिमी घाट के ढालों पर रबर के पेड़ लगाये गये हैं। यहां की जलवायु और मिट्टी रबर के वृक्षों के लिये अत्यन्त अनुकूल है। रबर का दूध इकट्ठा करने के लिये पेड़ की बाहरी छाल में छेद कर लिया जाता है। इसमें प्याला रख दिया जाता है। जिसमें रबर के बूँद टपकते रहते हैं।

निवासी

तंजौर को छोड़ कर मालाबार ही मद्रास प्रान्त का अत्यन्त घना बसा हुआ भाग है। जनसंख्या की सघनता यहां प्रायः ५०० प्रति वर्ग मील है। मालाबार के अति ऊँचे पहाड़ी प्रदेश प्रायः निर्जन हैं। पठार पर औसत से एक वर्गमील में १०० मनुष्य रहते हैं। सब से अधिक मनुष्य तट के समीप (तट से १० मील तक) रहते हैं। पोनानी तालुका में एक वर्गमील में १००० से अधिक मनुष्य रहते हैं। मालाबार में ८ प्रतिशत मनुष्य नगरों में रहते हैं। गांव भी अधिक नहीं हैं अधिकांश निवासी अलग अलग बिखरे हुये घरों में अपने खेतों के समीप रहते हैं। ९४ प्रतिशत मनुष्य मलयालम भाषा बोलते हैं। ४ प्रतिशत मनुष्य (चेट्टी आदि व्यापारी और कुली) तामिल भाषा बोलते हैं तट के समीप के व्यापारी, हिन्दुस्तानी, मराठी, गुजराती और अरबी बोलते हैं। कुछ गोआनी अधगोरे पुर्चगाली भाषा बोलते हैं मिनीकायद्वीप के निवासी

महल भाषा बोलते हैं जो सिंहाली उप भाषा है। कुछ पहाड़ी लोगों की भाषा एक दम भिन्न है मलयालम भाषा बड़ी मधुर है। इसका कुछ सम्बन्ध तामिल से अवश्य है। सत्रहवीं शताब्दी में लिपि आधुनिक मलयालम का विकास हुआ। इसी समय रामायण, महाभारत, शिवपुराण और भागवत आदि संस्कृत ग्रन्थों का मलयालम में अनुवाद हुआ। इसी से इस भाषा में संस्कृत शब्दों का बाहुल्य है। यहां ६८ प्रतिशत हिन्दू, ३० प्रतिशत मुसलमान और २ प्रतिशत ईसाई रहते हैं। (नम्बूदिरी) ब्राह्मण मालाबार में सर्वोच्च हिन्दू माने जाते हैं। तम्बुराकल, आध्यन, विशिष्ट और सामान्य आदि इनकी उपशाखायें हैं। एलापद इनसे नीचे गिने जाते हैं वे सामन्तों और नैयरों के पुरोहित होते हैं। भद्रकाली पुजारी अपनी पूजा में मांस और मदिरा का प्रयोग नहीं करते हैं। पुष्पगन ब्राह्मणों से कुछ नीच समझे जाते हैं। इनकी विधवायें अपनी जातियों में अथवा ब्राह्मणों के साथ विवाह सम्बन्ध कर सकती है। पुरापोथुवाल मन्दिर में ढोल बजाते हैं। मालापोथुवाल मन्दिर में मालायें चढ़ाते हैं। पिशारोदी मन्दिर में पूजा के लिये फूल लाते हैं। मरने पर शन्यासियों की तरह इनके शव को भी आसनबद्ध अवस्था में समाधि दी जाती है। वारियर लोग मन्दिर के पड़ोस में झाड़ू लगाते हैं। मारार या मारायन मन्दिर में नगाड़ा बजाते हैं। क्षत्रिय लोग शासक वर्ग से सम्बन्ध सामन्तन उच्च कोटि के सरदार होते हैं। वे अपने को साधारण क्षत्रियों से उच्च मानते हैं। नैयर में कई जाति के लोग शामिल हैं। यह प्रथम द्राविड़ विजेता थे जो यहाँ आकर

जागीरदार बन गये। कहते हैं नम्बूदरी ब्रह्मण और देव गन्धर्व अथवा राक्षस स्त्रियों से जो सन्तान उत्पन्न हुई वह नैयर कहलाने लगी। इनमें सामन्त और क्षत्रिय वर्ग भी सम्मिलित हैं। नैयर वीर योद्धा होते हैं। पहले वे राजाओं के साथ रहते थे। फिरियम (ग्रहम) नैयर भोजन बनाते हैं सूद्र नैयर सेवा कार्य करते हैं। मूत्तान वैश्य होते हैं। तरगन लोग भी व्यापारी होते हैं।

चालियन वे लोग हैं जिन्हें जमोरिन ने गणपति की पूजा का प्रचार करने के लिये यहां बुलाया। कहते हैं एक मन्त्री ने इनके भोजन में मछली मिलवा कर इन्हें भ्रष्ट कर दिया। अतः अब यह यज्ञोपवीत नहीं पहनते हैं। पूर्वी तट पर बसे हुये इनके साथी यज्ञोपवीत पहनते हैं। तियान या इजुवान अपने को शूद्र नहीं मानते हैं। कहते हैं यह लोग सिंहल (लंका) द्वीप से आये इसी से इनका यह नाम पड़ा। यह लोग नारियल लगाने और तोड़ने का काम करते हैं। बल्लूवन मछली मारने का काम करते हैं कमालन कारीगर होते हैं। वेत्तावन पहले नमक निकालते थे। इस समय राज का काम करते हैं। पारावन लोग चूना (चूनम) बनाते हैं। कानिसन ज्योतिषी होते हैं। कहते हैं इनकी उत्पत्ति एक ब्राह्मण ज्योतिषी और तियान स्त्री से हुई। यह लोग जन्म पत्री बनाते हैं और विवाह आदि का मुहूर्त बताते हैं। मन्नान लोग कपड़ा सीते हैं और ओझा का काम करते हैं। काबुथियान नाई का काम करते हैं। पानन गवैया होते हैं वे झाड़ने फूँकने का भी काम करते हैं। पुलुवन

नीच जाति के वैद्य होते हैं। पारायन लोग टोकरी बनाते हैं। नायदी लोग अति नीच जाति के लोग गिने जाते हैं। वे भीख मांगते हैं। जंगली जातियों में पानियन लोग सब से अधिक संख्या में हैं। वे वैनाद में बहुत हैं और खेतों में मजदूरी करते हैं। कहीं कहीं वे पहाड़ी चावल उगाते हैं। कुरूमन भी जंगली जाति के काले रंग के होते हैं। जंगल के कुरिचियन लोग शिकारी होते हैं। इनमें कुछ लोग खेती करते हैं। करिम्बालन लोग लकड़ी काटते हैं और जंगली काली मिर्च इकट्ठी करते हैं। मलक्कर लोग जंगल के अच्छी जाति के लोग गिने जाते हैं। इनके अतिरिक्त यहां और कई जातियां होती हैं।

मालाबार के घर में प्रायः तीन कमरे होते हैं। सब से उत्तर-पश्चिम की ओर सोने के लिये कमरा होता है। इसी में मासिक धर्म के अवसर स्त्रियां रहती हैं। इससे मिला हुआ बीच वाला कमरा सामान रखने के लिये होता है। इसी में पूजा का स्थान भी होता है। इसके दक्षिण में सामान रखने या सोने के लिये तीसरा कमरा होता है। पहले कमरे से मिला हुआ भोजन स्थान होता है। इसके आगे रसोई घर होता है। रसोई घर में आगे कुआं होता है। कुएं से मिली हुई रसोई घर में एक छोटी खिड़की होती है।

पास ही कुएं के ऊपर गड़ारी लगी रहती है जिससे रसोई घर से ही कुएं का पानी खींचा जा सकता है। कुएं से दक्षिण की ओर बराम्दा होता है। इसके आगे पुष्पवाटिका होती है। पुष्पवाटिका के पश्चिम में भी एक खुला बराम्दा होता है। लम्बूदरी ब्राह्मणों के घरों में रसोई घर प्रायः दक्षिणी-पूर्वी कोने

पर होता है। छोटी जातियां बिना खिड़की वाले एक कमरे के घर में रहती हैं।

मलयाली लोगों की पोशाक बड़ी सीधी सादी होती है। पुरुष कोनम धोती पहनते हैं। एक सफेद (मुण्डू) कपड़ा दाहिनी ओर एड़ी तक लटकता रहता है। एक अंगोछा कंधे पर लटकता रहता है। आजकल शहरों में सरकारी नौकर धोती के ऊपर कमीज कुरता और कोट पहनने की प्रथा हो गई है। कुछ लोग पाजामा भी पहनते हैं। घर पर सब लोग कमर के ऊपर कोई कपड़ा नहीं पहनते हैं। उत्सव के समय विशेष वस्त्र पहने जाते हैं। उच्च कोटि के लोगों की धोती की किनारी सुनहली होती है। पहाड़ी लोग एक ढीली लंगोटी पहनते हैं। स्त्रियों की सारी नीचे तक लटकती रहती है। वे एक छोटा कपड़ा बाहों के नीचे छाती के ऊपर पहन लेती हैं। यहां के लोग सिर पर साफा या कोई वस्त्र नहीं पहनते हैं। सिर नंगा रहता है। लेकिन सभी लोग छाता लगाते हैं। कुछ मछुए और कुली छाते के समान पत्तियों की एक बड़ी टोपी सर पर लगाते हैं।

मलयाली लोग चोटी को छोड़ कर प्रायः सिर को मुड़ाये रखते हैं। कुछ नये पढ़े लिखे लोग योरूपीय ढङ्ग के बाल रखते हैं। ओझा लोग बड़े बड़े बाल रखते हैं। पुरुष कानों में प्रायः अंडाकार सोने की छोटी बाली पहनते हैं। कुछ लोग कर्ण छेदन कराते हैं लेकिन कानों में कोई आभूषण नहीं पहनते हैं। पड़ा भागों में पुरुष गले में माला पहनते हैं।

बच्चे करधनी और माला दोनों पहनते हैं। स्त्रियां सब कहीं कानों में बाली पहनती हैं। कुछ लोग कान के बाहरी ओर कान को छूती हैं बाली या छोटी माला पहनते हैं।

मलयाली लोगों का प्रधान भोजन चावल है। नम्बूदरी लोग मांस या मदिरा का सेवन नहीं करते हैं। भात के साथ वे तरह तरह के शाक और दाल को खाते हैं। भोजन केले के पत्तों पर परोसा जाता है। कुछ लोग थाली में भोजन करते हैं। कुछ लोग एक बार भात और दूसरी बार दूध और फल या मिठाई का भोजन करते हैं। तामदी लोग मांसाहारी होते हैं। मछली और सुअर मगर आदि का मांस खाते हैं। पान सुपारी सभी लोग खाते हैं।

नैयर लोग तरह तरह का व्यायाम और अस्त्र शस्त्र का अभ्यास करते हैं। विवाहादि के अवसर पर इनका प्रदर्शन किया जाता है।

ब्राह्मण और अम्बालवासी धार्मिक नाटक दिखलाते हैं। वे राम या कृष्ण चरित्र सम्बन्धी नाटक दिखलाते हैं। इनकी मंडली में १२ नाचने वाले ४ गवैया और ४ ढोल मजीरा आदि बजाने वाले होते हैं। श्रोता और दर्शक भूमि पर बिछी हुई चटाइयों पर बैठते हैं। नाटक दिखाने वाले तरह तरह का भेष बना लेते हैं। कहीं कहीं साधारण नाच भी होता है लेकिन यह अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता है। गांवों में गेंद और धनुष—बाण का खेल होता है।

मालाबार का प्रधान उत्सव ओनम है जो अगस्त या सित-

म्बर मास में परशुराम की स्मृति में मनाया जाता है। घरों की सफाई होती है। फर्श पर फूल सजाये जाते हैं और छोटी छोटी मूर्तियों की पूजा होती है। वस्त्रों और केलों का दान दिया जाता है। सायंकाल को गाना बजाना होता है। विशु का उत्सव मार्च या अप्रैल मास में होता है। इस अवसर पर शुभ पदार्थों का दर्शन करना आवश्यक है। अतः विशु के पहले सायंकाल को झांकी सजाई जाती है। इसमें कांसे के कमंडल में नया कपड़ा, सोने का आभूषण, गंधक, दर्पण, लटका हुआ नारियल फल ककड़ी आम और कटहल रख लेते हैं। कानी के दोनों ओर रात्रि में दीपक जलता रहता है। प्रातःकाल होते ही सब लोग इस कानी का दर्शन करते हैं।

तिरुवातिर का उत्सव कामदेव की स्मृति में मनाया जाता है। प्रातःकाल होते ही सब लड़कियाँ एक साथ तालाब में स्नान करती हैं वे अपना बायां हाथ ऊपर उठाये रहती हैं और वे गीत गाती रहती हैं। वे अपनी दाहिनी हथेली पानी पर मारती रहती हैं। स्नान कर के वे झूला झूलती हैं। इस उत्सव के दिन प्रत्येक पति अपनी पत्नी के घर आता है।

दशहरा का उत्सव यह अयोध्या पूजा अथवा सरस्वती पूजा के नाम से मानाया जाता है। यह वास्तव में यहां पुस्तकों का त्योहार है। शिवरात्रि का उत्सव कुम्भम् फाल्गुन मास में मनाया जाता है।

नीरा उत्सव भी बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है इसमें घर स्वच्छ रहते हैं। आंगन गोबर से लीपा रहता है। दीवारें

पुत जाती हैं। द्वार सफेद चावल, फूलों और पत्तियों से सजाया जाता है। फिर गांव का पुजारी बाहर निकलता है। उसके पीछे एक मनुष्य शंख बजाता रहता है। शंख का शब्द सुन कर प्रत्येक घर का एक मनुष्य स्नानादि से पवित्र होकर धान की कुछ बाली एकत्रित करने के लिये खेत में जाता है। जिस किसी के खेत में धान पका रहता है उसी से सब लोग निःसंकोच बाली ले आते हैं। जब बाली लिये हुये मनुष्य द्वार पर पहुँचता है तो वहां उसे भार्या हाथ में प्रज्वलित दीपक लिये हुये मिलती है। दीपक बाली पर रख दिया जाता है। फिर इसे आंगन में ले आते हैं। एकत्रित लोग उच्च स्वर से कहते हैं "भरदो, भरदो, भरदो, वृद्धि करो, वृद्धि करो, वृद्धि करो, घर भर दो, टोकरी भर दो, बच्चों का पेट भर दो।" इसे लेकर एक चौकी की तीन बार परिक्रमा की जाती है। फिर इसे एक केले के पत्ते पर रख देते हैं। जलता हुआ दीपक दाहिनी ओर रक्खा जाता है। गणपति जी को नारियल और मिठाई की भेंट चढ़ाई जाती है। फिर गाय के गोबर के साथ धान की बालियां घर के भिन्न भिन्न भागों में खोंस दी जाती हैं। अन्त में बड़ा भोज होता है। जिस दिन नया चावल पकाया जाता है उस दिन भी उत्सव मनाया जाता है। मकर के अन्त में धान की दूसरी फसल कट जाने पर भूमि देवी के सम्मानार्थ उच्छल या उच्छारल उत्सव तीन दिन तक मनाया जाता है। इस दिन चेर पल चेरी और कनयारा में तिनकों से गाय बैल की बड़ी-बड़ी मूर्तियां बनाकर भगवती के मन्दिर में ले जाते हैं।

विवाह

जन्मपत्री के मिल जाने और दहेज तय हो जाने पर विवाह के लिये शुभ दिन निश्चित किया जाता है। इस दिन वर को प्रस्थान करने के पूर्व इष्ट मित्रों और सम्बन्धियों को भोजन कराया जाता है। इसी समय वधू के घर पर भी भोज दिया जाता है। घर से बाहर जाने के लिये और प्रवेश करके वर दाहिना पांव आगे बढ़ाता है। वह मंगल मंत्र भी उच्चारण करता रहता है। द्वार के बाहर अष्ट मांगल्यम। (आठ मंगल सूचक वस्तुयें) लिये हुये नायर महिलाओं की टोली मिलती है वर-यात्रा में इष्ट मित्र और ढाल तलवार लिये हुये नायर अंगरक्षक रहते हैं। एक मनुष्य जलती हुई मशाल लिये रहता है। वधू के द्वार पर जलती हुई अग्नेक और मांगल्यम लिये हुये नायर स्त्रियों की टोली मिलती है। वर भीतर आंगन में जाकर पूर्व की ओर मुंह करके बैठता है वधू को पिता आकर उसके सामने बैठता है। वह वर का दाहिना हाथ पकड़ कर उससे स्नान करने और कन्या से विवाह करने के लिये कहता है। स्नान कर के वर नये वस्त्र पहिनता है। वह कुश की बनी हुई पैंती पहन कर कमरे के भीतर बैठता है। वह गणपति पूजन करता है और देवताओं को भेंट चढ़ा कर नम्बूदरी ब्राह्मणों को पान सुपारी और दक्षिणा देता है। प्रायश्चित करके वह नन्दीमुखम् देता है वधू एक पुराने वस्त्र से मुँह ढाके हुए इसी कमरे में आती है। कन्या का पिता चार, नम्बूदरी ब्राह्मणों के साथ वधू के ऊपर गंगाजल या कोई पवित्र जल छिड़कता

है। फिर हवन होता है। माता लड़की को तुलसी की माला देती है। फिर वह वर के सामने लाई जाती है। इसे मुखदर्शन कहते हैं। वधू तुलसी की माला वर को देती है। इसके पश्चात् उदगपूर्व कन्यादान होता है। वर और कन्या का पिता पश्चिम की ओर मुँह करके खड़े होते हैं। वधू उनके सामने खड़ी होती है। फिर तीनों इस प्रकार दाहिना हाथ बढ़ाते हैं कि कन्या का हाथ पिता और वर के हाथ के बीच में रहता है। फिर दहेज कन्या को दिया जाता है। कन्या इसे वर को दे देती है। फिर कन्या पति और हवन की अग्नि के बीच में होकर वेदी के पूर्व में पीढ़ा पर बैठती है। वर दूसरे पीढ़ा पर कन्या के बायें ओर बैठता है और अग्नि में घी की आहुति देता है। इसके पश्चात् पाणिग्रहण होता है। वर अपने पीढ़ा से उठ कर वधू के सामने खड़ा होता है। वधू बायें हाथ में दर्पण लिये रहती है। वह दाहिना हाथ आगे बढ़ाती है। वर वधू के हाथ को पकड़ कर बैठ जाता है। फिर कन्या का भाई आकर दर्पण को ले लेता है वर वधू के हाथों में थोड़ा घी छोड़ देता है। इसमें कन्या का भाई दो मुट्ठी चावल छोड़ देता है। वर चावल को कन्या के हाथ से लेकर अग्नि में छोड़ देता है इसे लाजा होमम कहते प्रदक्षिणा और अस्मारा होराम के पश्चात् सप्त पदी संस्कार होता है वर वधू के साथ सात पद उत्तर-पूर्व की ओर चलता है और वधू का दाहिना हाथ अपने दाहिने हाथ से और दाहिना पांव दाहिने पांव से छू लेता है। फिर दोनों चक्की और हवनाग्नि के बीच से जाकर घड़े के सामने बैठ जाते हैं। वधू वर के पीछे बैठती है फिर वर घड़े से जल लेकर अपने और वधू के

ऊपर छोड़ लेता है। फिर वे वेदी के पास आकर ध्रुव अरुन्धती और सप्तर्षि (उत्तर) की ओर मुँह करके बैठ जाते हैं। वर अग्नि में आहुति छोड़ता है। फिर वर अपने घर के लिये प्रस्थान करता है। घर पहुँचने पर वहां भी वेदी तैयार की जाती है और हवन होता है। इसके पश्चात् वर और वधू एक कमरे में कुछ क्षण के लिये ठहरते हैं सायंकाल को फिर हवन होता है। चौथे दिन वर और वधू को तेल से स्नान कराई जाती है। हवन और गणपति पूजन के पश्चात् वधू शुभ मुहूर्त में अपने कमरे में प्रवेश करती है। वर अपने हाथ में दो पुष्प मालायें लिये हुये जाता है। एक माला दीपक को और दूसरी वधू को पहनाई जाती है। वर वधू के ऊपरी भाग में सुगन्ध लगाता है। फिर वे स्नान करते हैं और कपड़े बदलते हैं। वे दोनों पास पास बैठते हैं। वधू छाता के नीचे रहती है। वर उसे जल देता है। फिर दोनों केले के एक ही पत्ते में भोजन करते हैं। रात्रि को दोनों एक ही कमरे में सोते हैं। पांचवें दिन वे पानी की एक नाद में मछली पकड़ते हैं। उसी दिन वे एक दूसरे के तेल लगाते हैं। वधू वर के बालों के कंघी करती है सायंकाल को वर वधू को फूलों से सजाता है। छठे या दसवें दिन ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है।

मालाबार में साढ़े आठ लाख या तीस फीसदी मुसलमान रहते हैं। इनमें अधिकतर मापला हैं। मापला शब्द मापिल्ला (माता का बेटा) से बिगड़ कर बना है। इनमें कुछ नीची जाति के लोग मुसलमान होंगे। कुछ अरब व्यापारियों की वर्णशंकर सन्तान हैं। कालीकट के राजा जमोरिन ने अरबी

व्यापार को बढ़ाने और पुर्चगालियों से लोहा लेने के लिये अपनी प्रजा को मापला बन जाने के लिये प्रोत्साहित किया। मछली मारने वालों में कम से कम एक पुरुष मापला (मुसलमान) बन गया। टीपू के समय में सभी जातियों के लोग मुसलमान होने लगे। मापला लोग मितव्ययी और उत्साही होते हैं। वे सभी प्रकार का व्यापार करते हैं। उनमें कुछ लोग बड़े धनी हैं। बहुत से लोग अपना पैसा भूमि लेने में लगाते है। साधारण मापला मछली मारने और मजदूरी का काम करते हैं। कुछ मापला व्यापारी लंका, मलय द्वीप और बरमा में मिलते हैं। वे बड़े कट्टर होते हैं और कभी कभी धार्मिक दंगे कर बैठते हैं। धनी मापला हवादार कई मंजिल ऊँचे घरों में रहते हैं। साधारण मापला मट्टी के बने कच्चे घरों या छप्परों से छाये हुये झोपड़ों में रहते हैं। पुरुष बैंजनी, पीली या हरी किनारी वाली मुंडे (कपड़े) पहनते हैं। वे कमर में एक छोटी छूरी खोंसे रहते हैं। बड़े, लोग ऊपर एक चदरा डाल लेते हैं और एक बंडी पहने रहते हैं। नगरों में कुछ योरूपीय ढंग के कोट और दूसरे कपड़े पहनते हैं। वे लोग सिर मुंडाये रहते हैं। वृद्ध लोग दाढ़ी रखते हैं। स्त्रियां नीला कपड़ा पहनती हैं। उनके सिर पर घूंघट के लिये एक कपड़ा रहता है। धनी मापला स्त्रियां रंगीन रेशमी कपड़ा पहनती हैं। वे परदे में रहती हैं। वे माला, बाली. पहुँची आदि तरह तरह के आभूषण पहनती हैं। कोई कोई स्त्रियां अपने कान में दस बारह छेद करके कई बाली पहनती हैं।

मछली और चावल मापला का प्रधान भोजन है। कुछ

लोग मांस खाते हैं। वे प्रायः एक साथ बैठ कर भोजन करते हैं। कुछ मछुए शराब भी पीते हैं मापला लोग मुसलमान (सुन्नी) धर्म के शफी सम्प्रदाय को मानते हैं। कुछ लोग शिया हैं पहले ये तुर्की के खलीफा को मानते थे। इनमें बहुत कम लोग पढ़े लिखे होते हैं। वे पांच (कलमा, नमाज़, रोजा, जकात और हज) बातों को मानते हैं। मापला लोग ईश्वर के अतिरिक्त कई शहीदों की भी पूजा करते हैं। कुछ लोग मौलाद को मानते हैं। मौलाद अरबी में हज़रत मुहम्मद, जन्म, जीवन, कार्य और भाषण से सम्बन्ध रखनेवाली छोटी पुस्तक होती है। शेख मुहीउद्दीन के सम्बन्ध में भी इसी तरह की पुस्तक है। शेख मुहीउद्दीन नबकी ग्यारहवीं पीढ़ी में पैदा हुये। उन्होंने कई आश्चर्यजनक कार्य किये। कुरान तीस खंडों में बँटा हुआ है। प्रत्येक धनी घर में मुल्ला प्रति दिन कुरान का एक खंड पढ़ कर सुनाने आता है। इस प्रकार महीने में कुरान का पूरा पाठ समाप्त हो जाता है। मापला लोग जिन और शैतान से बचने के लिये कुछ न कुछ अनुष्ठान करते हैं। वे प्रायः छोटे झंडों पर कुरान की आयत लिख कर टांग देते हैं अथवा ताबीज बनाकर पहन लेते हैं। ७ और १४ वर्ष के बीच में मापला लड़के का खतना होता है। मुल्ला फातहा पढ़ता है। नाई एक बाल काट देता है। इसके बाद वह ठीक होने पर मस्जिद में नमाज़ पढ़ने जाता है। १८ या बीस वर्ष की उम्र में लड़के का विवाह होता है। विवाह में दहेज भी दिया जाता है। प्रायः काजी ब्याह (निकाह) करने घर पर आता है। निकाह हो जाने

पर दावत दी जाती है, यहां एक मनुष्य कई स्त्रियों से ब्याह करता है।

जब कोई मनुष्य मर जाता है तब उसके कपड़े उतार लिये जाते हैं। पैर मक्का की ओर कर दिये जाते हैं। पैरों के दोनों अंगूठे एक साथ बांध दिये जाते हैं। हाथ छाती के ऊपर कर दिये जाते हैं। दाहिना हाथ बायें हाथ के ऊपर रहता है। बाहें भी एक कपड़े से बांध दी जाती हैं। लाश के ऊपर कुरान पढ़ने के लिये मुल्ला बुलाया जाता है। जब तक लाश कब्रिस्तान को नहीं जाती है तब तक वह कुरान पढ़ता रहता है। जब रिश्तेदार आ जाते हैं तब लाश को धोकर ज़मीन पर बिछी हुई चटाई पर लिटा देते हैं। ऊपर से एक साफ कपड़ा फैला दिया जाता है। नाक कान, ओठ और अँगुलियों के बीच में रुई रख देते हैं। शरीर पर सफेद कपड़ा लपेट दिया जाता है फिर लाश मस्जिद से आई हुई तिखटी पर रखकर मस्जिद को ले जाते हैं। मस्जिद में लाश को पश्चिमी दीवार के समीप रखते हैं। शोकातुर लोग खड़े होकर नमाज़ पढ़ते हैं। फिर लाश को कब्र के पास ले जाते हैं। कब्र उत्तर-दक्षिण दिशा में खुदी रहती है कपड़ों का ढीला करके लाश को कब्र में दाहिनो ओर को इस प्रकार रखते हैं कि मुँह मक्का की ओर रहता है। दाहिने गाल के नीचे मुट्ठी भर मिट्टी रख दी जाती है। फिर कब्र को कड़ी मिट्टी या पत्थर से ढक देते हैं। शोक मग्न लोग कलमा या कुरान के किसी पाठ को पढ़ते हुये एक मुट्ठी मिट्टी कब्र में फेंक देते हैं। मुल्ला कब्र के सिरहने बैठ कर कुरान से तिलकू

(शिक्षा) पढ़ना है। इसका आशय यह होता है कि मृतक से फरिश्ते जो प्रश्न पूछ रहे हैं। उनको वह किस प्रकार उत्तर दे। अन्त में गरीबों को चावल और पैसा बांट कर सब लोग घर लौट आते हैं। कुछ लोग तीन दिन तक कुछ अपनी शक्ति के अनुसार ४० दिन तक कब्र पर मुल्ला से कुरान पढ़वाते हैं। यह अखंड पाठ दिन रात होता रहता है। कम से कम तीन दिन तक घर पर भी कुरान पढ़ा जाता है। तीसरे दिन घर के लोग कब्र का दर्शन करने जाते हैं। इसके बाद मौलाद होता है। मुल्लाओं को धन दिया जाता है। दान पुण्य किया जाता है और रिश्तेदारों को दावत दी जाती है। चालीसवें दिन भी इसी प्रकार कब्र का दर्शन, दान पुण्य और दावत का प्रबन्ध होता है। गरीबों में इसी दिन शोक समाप्त हो जाता है। धनी लोग वर्षीय (तिथि) भी मनाते हैं। विधवायें १० दिन तक घर में छिपी रहती हैं। वे किसी पुरुष को नहीं देखती हैं। तीन महीने तक वे शोक मनाती हैं। फिर वे दूसरा विवाह कर सकती हैं।

मालाबार में लगभग ५० हजार ईसाई रहते हैं। इनमें अधिकांश नज़रानी मापला (रोमन केथलिक ईसाई या सिरियन ईसाई) हैं। इनके विषय में तरह तरह की दन्त कथायें हैं। सिरियन विशप (पुजारी) अविवाहित रहते हैं और जो दान उन्हें मिलता है उसी से वे अपना निर्वाह करते हैं। उनके रंगीन कपड़ों पर सुनहरा क्रास बना रहता है। वे दाहिने हाथ की चौथी अंगुली में अंगूठी पहनते हैं। मरने पर यह

लोग कपड़े पहने हुये बैठी हुई (आसन बद्ध) स्थिति में गाड़ दिये जाते हैं। साधारण ढंग से वे सफेद पाजामा और सफेद लम्बा कुरता या जामा पहनते हैं। इस ओर इसाइयों में छोटी उम्र (दस, बारह लड़कों के लिये और छः सात लड़कियों के लिये विवाह हो जाता था) अब इसमें कुछ सुधार हो गया है। १६ वर्ष के लड़के १२ वर्ष की लड़की से विवाह करते हैं। विवाह से पूर्व रविवार को दहेज ले लिया जाता है। पादरी के सामने गिरजे में विवाह होता है। शनिवार को विवाह का पंडाल बनता है और घर चावल के आटे से सजाया जाता है। शनिवार को वर बाल बनवाता है। फिर वर और वधू दोनों स्नान करते हैं। दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही दूल्हा गिरजे में वधू से पहले पहुँचता है। जाने से पहले वह गुरू का आशीर्वाद लेता है और उसे दक्षिणा देता है। विवाह के समय दहेज का दसवां भाग गिरजे को दिया जाता है। पादरी और बिशप (बड़े पादरी) को भी फीस दी जाती है। घर लौटते समय वर और वधू के ऊपर एक विशेष छाता लगाया जाता है। घर के बाहर दीपक लिये हुये वधू की बहिन मिलती है। वह दूल्हा के पैर धोती है। फिर दोनों पंडाल में जाते हैं। यहां पादरी और सम्बन्धी वर वधू को मिठाई और केला खिलाते हैं। फिर सब को भोज दिया जाता है।

मरने के समय मृतक के सभी रिश्तेदार एक कफ़न लाते हैं। जब लाश कब्र में उतारी जाती है तब मृतक के कान, आंख और नाक में तेल डाला जाता है। इस अवसर पर पादरी को भेंट दी जाती है। ग्यारहवें दिन पड़ोसी और सम्बन्धियों को भोजन कराया जाता है।

मालाबार का प्रधान पेशा खेती है। कुछ लोग मछली पकड़ने में लगे हुये हैं। यहाँ के लोगों को नारियल से भी बड़ा लाभ होता है। किसी किसी वर्ष ८० या ९० लाख रुपये का नारियल का तेल यहां से बाहर भेजा जाता है। नारियल का तेल खोपरे (गिरी) से निकाला जाता है। खली भी बाहर भेज दी जाती है। सफेद खोपरे का तेल अधिक मूल्यवान होता है। काले खोपरे का तेल प्रायः जलाने के काम आता है। कोचीन और कालीकट में तेल निकालने की बड़ी बड़ी मिलें है। और स्थानों में साधारण कोल्हू से तेल निकाला जाता है। खली पशुओं को खिलाई जाती है और खाद के काम आती है। नारियल को जटा से रस्सी और चटाई बनाई जाती है। प्रति वर्ष यहां से प्रायः पचास लाख रुपये की रस्सी बाहर जाती है। नारियल के छिलके पानी के पास कीचड़ या गीली मिट्टी में गाड़ दिये जाते हैं। वे ६ मास, एक वर्ष अथवा डेढ़ वष तक गड़े रहते हैं। जितने अधिक समय तक वे गड़े रहते हैं उतनी ही अच्छी रस्सी होती है। रेशे धोने के लिये बहता हुआ मीठा पानी अच्छा रहता है। खारे पानी में धोने से इसमें धब्बे पड़ जाते हैं और रंग बिगड़ जाता है। धोने से पहले छिलकों को गड्ढों से निकाल कर मुंगरी से पीटते हैं। फिर धोने के बाद इसे बारह घंटे तक धूप में सुखाते हैं। नारियल की रस्सी की देश-विदेश में बड़ी मांग है। पत्तियों से छाता, टोपी चटाई और सूप बनाते हैं। पाल घाट की घास से बनी हुई चटाई बड़ी बढ़िया होती हैं। ताड़ से ताड़ी और साबूदाना निकाला जाता है।

संक्षिप्त इतिहास

मालाबार के प्राचीन इतिहास का बहुत कम पता चलता है। करेलोत्पत्ति और केरल महात्म्यम जो अग्नि पुराण के आधार पर संस्कृत में लिखा है। उससे कुछ प्राचीन इतिहास का संकेत मिलता है। यहाँ कुछ शिलालेख मिले हैं।

तियन शब्द द्वीप से बिगड़ कर बना है। इसी से अनुमान किया जाता है कि यह लोग सिंहल (लंका) द्वीप से यहाँ आये। नम्बूदरी ब्राह्मण उत्तर की ओर से आये। जङ्गलों और पहाड़ियों में रहने वाले लोग मालाबार के प्राचीन निवासी हैं। मापला (मापिल्ला) नये लोग हैं। अरबी लोगों के आने के बाद कुछ लोग वर्णशंकर हो गये कुछ मुसलमान बन गये। यह सब मापला कहलाने लगे।

कहते हैं मालाबार को परशुरामजी ने समुद्र से निकाल कर रचा था। इसी से प्राचीन समय से मालाबार परशुराम क्षेत्र कहलाने लगा। भूगर्भ वेत्ताओं का भी अनुमान है कि पहले समुद्र पश्चिमी घाट को छूता था। फिर भूकम्प अथवा ज्वालामुखी के प्रभाव से पर्वत और समुद्र के बीच में स्थल निकल आया। आगे चल कर यह चेर राज्य बना। इस हिन्दू राज्य का पश्चिमी भाग केरल कहलाने लगा। नालिकेरम (नारियल) की अधिकता होने से इसका नाम केरम या केरल पड़ गया। अशोक के समय में यहाँ के राजा केरल पुत्र कहलाता था। प्राचीन समय में मिस्र, यूनान, रोम आदि से केरल के लोग व्यापार करते थे।

प्राचीन तामिल साहित्य में कई पुराने चेर राजाओं के नाम आते हैं। एक राजा ने महाभारत में कौरवों और पांडवों की

सहायता के लिये दो सेनायें भेजी थी। चेर काल में इस प्रदेश की सभ्यता बहुत ऊँची हो गई। वाञ्जी राजधानी थी। राजधानी के किले में तरह तरह के अस्त्र शस्त्र और यन्त्र थे। दुर्ग के अतिरिक्त राजप्रसाद विष्णु मन्दिर और बौद्ध चैत्य बड़े सुन्दर थे। पेरियर नदी के मुहाने पर मछरी नगर व्यापार का केन्द्र था यहां यवनों के जहाज सोना लाकर काली मिर्च मोल ले जाते थे। राजा को परामर्श देने के लिये प्रजा के प्रतिनिधियों मन्त्रियों, पुजारियों और वैद्यों की समितियाँ थीं। उपज का छठा भाग कर के रूप में लिया जाता था। बन्दरगाहों और मार्ग केन्द्रों पर चुङ्गी लगती थी। अपराधियों को कड़ा दंड दिया जाता था। अपराध बहुत कम होते थे। भास्कर रवि वर्मा के समय के कई ताम्र लेख मिले हैं। सातवीं शताब्दी के पश्चात चीन और मालाबार के बीच में व्यापार होने लगा। प्रसिद्ध अरबी यात्री इब्न बतूता (१३४६-४७) में मालाबार का उल्लेख किया है। मार्को पोलो यहां बहुत पहले आया था। चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी में मालाबार बाहरी आक्रमण से मुक्त रहा। लेकिन यहां कई छोटे छोटे स्वाधीन राज्य हो गये। यह आपस में एक दूसरे से लड़ते रहते थे। जमोरिन इन राजाओं में से एक था। जमोरिन राजा बड़े इमानदार थे। उन्होंने अरबी व्यापारियों को प्रोत्साहित किया। कुछ अरबी उसके राज्य में बस गये। उसकी राजधानी कालीकट का व्यापार बहुत बढ़ गया। इमानदारी इस नगर में इतनी थी कि व्यापार का जो माल जहाजों से उतार कर सड़कों और बाजारों में बिना किसी

को सौंपे हुये और बिना किसी चौकसी के डाल दिया जाता था वह कई दिन तक उसी प्रकार पड़ा रहता था। उसे कोई नहीं छूता था। अरबी व्यापार के बढ़ने से चीनी व्यापार का अन्त हो गया १४९८ में पुर्चगाली व्यापारियों के यहां आने से अरबी व्यापार को बड़ा धक्का लगा। १६५ वर्ष (१६६३ ई०) तक इस ओर पुर्चगालियों की प्रधानता रही। १६६३ में कोचीन उनके हाथ से चला गया। इस से मालाबार में उनकी शक्ति का अन्त हो गया। वास्कोडिगामा चार विचित्र जहाजों के साथ कालीकट में उतरा। वह अरबी (मूर) व्यापार को नष्ट करना चाहता था। अतः मूर लोगों ने भी उसके मार्ग में बाधायें डालीं। अन्त में जमोरिन राजा ने उसे व्यापार करने और कालीकट नगर में गोदाम खोलने की आज्ञा दे दी वह भारतीय व्यापार के नमूने और जमोरिन का पत्र लेकर पुर्चगाल को लौट गया। दूसरी बार ७० पुर्चगाली यहां आये। वे यहां भली भांति सुरक्षित थे। काली मिर्च अधिकाधिक मात्रा में उनके पास आने लगी। दो महीने में दो जहाज़ काली मिर्च से लद गये।

पुर्चगालियों ने मूर लोगों का लदता हुआ एक जहाज़ पकड़ लिया। इससे दोनों में खुल्लमखुल्ला लड़ाई होने लगी। मूर लोगों ने अचानक छापा मारा। पुर्चगाली गोदाम में छिप गये २ घन्टे सामना करने के बाद पुर्चगाली लोग अपने जहाजों की ओर भागे। इस प्रयत्न में केवल २० पुर्चगाली जहाज़ तक पहुंच सके। शेष मारे गये। दूसरे दिन पुर्चगालियों ने कालीकट नगर पर गोले बरसाये और मूर जहाज़ों पर आक्रमण किया। फिर वे कोचीन की ओर चले गये। कोचीन नदी के मुहाने पर

पुर्चगालियों के जहाजों ने १५०० ई० के दिसम्बर मास में लंगर डाले यहां उन्होंने राजा को मित्रता का विश्वास दिलाया। अतः १५ दिन में उनके जहाज़ मसालों से लद गये। जब ज़मोरिन का जहाज़ी बेड़ा यहां आया तब पुर्चगाली जान बचा कर अपने देश को चल दिये। कोचीन का राजा भी जमोरिन से जलता था। अतः पुर्चगालियों ने यहीं अपना व्यापार केन्द्र और किला बनाया। आगे चल कर उन्होंने क्विलन और कनानोर में भी किले बनवाये। मूर लोगों से लड़ाई चलती रही। एक बार २,००० मूर मार डाले गये। कनानोर के घेरे में पुर्चगाली हारे। लेकिन १५०९ में चौल की समुद्री लड़ाई में मिस्र के सुल्तान का जहाजी बेड़ा हार गया। इससे पुर्चगाली पूर्वी समुद्र में सर्व प्रधान हो गये। १५१० ई० में पुर्चगालियों ने कालीकट पर आक्रमण किया। इसमें उनकी हार हुई। १५१३ ई० में पुर्चगालियों ने सन्धि कर ली। इससे उन्हें व्यापार में बड़ी सुविधा मिली। १५१६ और १५२० में क्विलन से व्यापारिक सन्धि हुई। १५२४ में वास्कोडिगामा यहां गवर्नर होकर आया। लेकिन ३ महीने के बाद वह मर गया। वास्कोडिगामा के मरने पर जमोरिन से लड़ाई फिर छिड़ गई। यह लड़ाई १५५९ ई० तक चलती रही। कालीकट में जो किला पुर्चगालियों ने बनाया था उसे जमोरिन की सेना ने घेर लिया। १५२५ ई० में पुर्चगालियों ने यह किला छोड़ दिया। लेकिन उन्होंने काली कट से ६ मील की दूरी पर चालियम में बेपुर नदी के मुहाने पर एक नया किला बनाया १५३६ में उन्होंने कांगानोर में एक दूसरा किला बनाया।

१५५९ के बाद मूर लोगों ने खुल्लमखुल्ला युद्ध बन्द कर दिया। लेकिन वे छिप कर कभी कभी छापा मारते रहते थे। पुर्चगालियों ने मूर और दूसरे लोगों को पकड़ कर ईसाई बनाना आरम्भ कर दिया। काली मिर्च, सोंठ आदि मसाले का एक मात्र व्यापार पुर्चगालियों के हाथ में आ गया और १६ वीं शताब्दी के अन्त तक उनके हाथ में बना रहा। १५६५ में विजय नगर राज्य के पतन से उनके व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा। विजयनगर में योरुपीय सामान बहुत बिकता था। अरबी घोड़े भी वहां बहुत बिकते थे। १५७० में जमोरिन ने पुर्चगालियों का चालियम किला छीन लिया। १५८० में पुर्चगाल स्पेन में मिल गया। इसके बाद उनकी शक्ति और भी अधिक क्षीण होने लगी। १५८१ में हालैंड स्पेन से प्रथक हो गया। इसके बाद इङ्गलैंड हालैंड और फ्रांस ने भारतवर्ष में अपना अड्डा जमाने और पुर्चगाली व्यापार को नष्ट करने का पूरा प्रयत्न किया। १६१५ में अँग्रेजी कप्तान कीलिंग ने जमोरिन से सन्धि की। १६२३ में गोआ घेर लिया गया। १६३० में इंगलैंड और स्पेन में सन्धि हो गई। १६३५ में कोचीन से प्रथम बार काली मिर्च सीधी इङ्गलैंड पहुँची १६६२ में डच लोगों ने पुर्चगालियों से क्रांगानोर छीन लिये दूसरे वर्ष उन्होंने कनानोर पर अधिकार कर लिया। कुछ ही वर्षों में काव्याई नदी से कुमारी अन्तरीप तक समस्त तटीय व्यापार डच लोगों के हाथ में आ गया तंगासेरी, कोचीन, क्रांगानोर चेत्तूवाई और कनानोर बन्दरगाहों पर डच अधिकार था। पर लड़ाई का खर्च हालैंड की शक्ति के बाहर हो रहा था। अतः १६९१ ई० में डच लोगों ने चेत्तूवाई जमोरिन को सौंप

दिया। १६९७ ई० में उन्होंने छोटे छोटे स्थान छोड़ दिये और तङ्गासेरी, कांगानोर और कनानोर के किले तोड़ दिये। कोचीन पहले से आधा रह गया। १७०१ में डच लोग जमोरिन से फिर लड़ बैठे। युद्ध ९ वर्ष तक चला। डच व्यापार को बड़ी हानि पहुँची। १७२१ ई० में डच ईस्ट इण्डिया कम्पिनी युद्ध से प्रथक हो गई और पश्चिमी तट से डच साम्राज्य उठ गया।

अंग्रेज व्यापारी कोचीन और कालीकट में साधारण प्रजा की भांति रहते थे। जमोरिन उनकी रक्षा करता था। आगे चल कर उन्होंने ट्रावनकोर में अँजेंगो और उत्तरी मालाबार में टेलीचेरी में कोठियां बनाई। १६९० में अँग्रेजों ने अंजेंगोन किला बनाना आरम्भ कर दिया। ११२५ ई० में एक फ्रांसीसी बेड़ा टेलीचेरी से ४ मील दक्षिण की ओर मायाजी नगर के सामने आ पहुँचा। इसने तोपों की आड़ में अपनी सेना उतार दी और अँग्रजों से किला छीन लिया। इस सेना नायक का नाम माही था। अतः उसकी स्मृति में इस स्थान का नाम माही पड़ गया। इस घटना से अंग्रेजों और फ्रांसीसियों में इस ओर एक शताब्दी तक व्यापारिक प्रभुत्व के लिये युद्ध चलता रहा। देशी राजाओं को शतरंज के मुहरों के समान प्रयोग करके दोनों अपनी शक्ति बढ़ाते रहे। अंग्रेजों ने कनारा में हस्तक्षेप किया। १७४० ई० में फ्रांसीसियों ने तानूर पर अपना झंडा फहराया। १७४१ में फ्रांसीसियों और अंग्रेजो में समझौता हो गया। लेकिन १७४४ में लड़ाई फिर छिड़ गई जो १७४८ में समाप्त हो गई। १७५६ में लड़ाई फिर छिड़ गई। इस बार अंग्रेज

विजई हुये। उन्होंने माही पर अधिकार कर लिया। उत्तरी मालाबार से फ्रांसीसी प्रभुत्व जाता रहा। १७५७ में जमोरिन ने पालघाट के कुछ भाग पर अधिकार कर लिया। उसने डिंडीगल के फौजदार हैदरअली से सहायता मांगी। हैदर अली की सेना मालाबार तट पर उतर आई। कुछ ही समय में उसने इस ओर के छोटे छोटे राजाओं को हरा दिया। १७६६ में हैदर अली ने कालीकट को घेर लिया। हैदर अली ने १ करोड़ मुहरें हरजाने में मांगी। जमोरिन यह रक़म देने में असमर्थ था। जब जमोरिन अपने ही महल में क़ैद कर लिया गया और वह पूजा पाठ न कर सका तो उसने अपने हाथ से ही चिता तयार करके अग्निज्वालाओं में अपने को भस्म कर डाला। जब हैदर अली कोयम्बटोर को लौट गया तो मालाबार में विद्रोह फैल गया। यह समाचार सुनते ही वह तुरन्त लौट आया। विद्रोही नायर मार डाले गये। उनके घर जला दिये गये और स्त्री बच्चे कैद कर लिये गये। कुछ समय तक शान्ति दिखाई दी। लेकिन हैदरअली के चले जाने पर यहां फिर विद्रोह की आग भड़क उठी। इस बार भारी रक़म लेकर हैदर अली की सेना लौट आई। इसी बीच में संयुक्तराष्ट्र अमरीका को फ्रांस ने स्वाधीन मान लिया। इससे इङ्गलैंड फ्रांस में लड़ाई छिड़ गई। कोट्टायम और कदत्तनाद की सहायता से अंग्रेजों ने माही को घेर लिये १७७९ के मार्च मास में माही अंग्रेजों के हाथ आ गया हैदर अली माही के ही बन्दरगाह से गोला बारूद और दूसरा सामान योरुप से मंगाता था।

अंग्रेज़ों को सहायता देने को हैदरअली ने कोदत्तनाद राजा को गद्दी से उतार दिया। और उसके स्थान अपने अनुयायी को राजा बनाया। १७७९ तक माही को खाली कर दिया गया और समस्त ब्रिटिश सेनायें टेली चेरी में एकत्रित हुई। १७८० में हैदरअली ने कर्नाटक पर और उसके एक सेना पति ने टेली चेरी पर चढ़ाई की। घेरा एक वर्ष तक चला। फिर बम्बई से नई सेना अंग्रेज़ों की सहायता के लिये आ गई। हैदरअली के सेना पति को घेरा उठाना पड़ा। माही फिर अंग्रेज़ों के हाथ आगया। कालीकट भी अंग्रेज़ों ने ले लिया। उत्तरी पालघाट हैदरअली के राज्य में रह गया। हैदरअली ने नई सेना मालाबार की ओर भेजी। नैयर सिपाहियों की सहायता से अंग्रेज़ों ने इस सेना को हरा दिया। वर्षा आरम्भ होने पर अंग्रेज़ी सेना फिर कालीकट को लौट आई। वर्षा समाप्त होने पर जब अंग्रेज़ी सेना पालघाट की ओर बढ़ी तब टीपू ने इसे पीछे भगा दिया। इसी समय १२ दिसम्बर १७८२ को हैदरअली मर गया। टीपू सिंहासन पर बैठने के लिये मैसूर लौट गया। ब्रिटिश सेना ने मंगलोर पर अधिकार कर लिया। १७८३ में उसने पालघाट छीन लिया। पर कुछ ही समय में टीपू की सेना ने पालघाट से कोटा नदी तक अपना अधिकार कर लिया। १७८४ में जो सन्धि हुई उससे मालाबार का अधिकांश भाग टीपू को मिल गया। पर टीपू के कर्मचारी और अधिक कर वसूल करने लगे। इससे यहां मापला लोगों ने भी विद्रोह मचा दिया। १७८८ ई० में टीपू इस पर फिर आया। उसने

मालाबार की राजधानी कालीकट से उठाकर एक नये स्थान में ले जाने का निश्चय किया। उसने फेरोक गांव के पास एक दृढ़ किला बनवाया। यहीं कई सड़कें लाकर मिला दी गईं। उसने कम्पिनी से दरमपट्टनम द्वीप छीन लिया। १७८९ ई० में टीपू ने ट्रावन कोर पर चढ़ाई की। कोचीन राजा और जमोरिन अंग्रेज़ों से मिल गये। दूसरे राजाओं ने भी साथ दिया। कुछ ही समय में मालाबार से टीपू का अधिकार उठ गया। १७९९ में वेनाद और कुर्ग पर भी अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया। १८१७ में माही फिर फ्रांसीसियों को लौटा दिया गया। १९०६ ई० में अंग्रेज़ों और टंगासेरी मालाबार से प्रथक कर दिये गये। उनका एक अलग जिला बना दिया गया। टीपू के राज्य के अन्त हो जाने पर यहां समय समय पर मापला विद्रोह होते रहे। इनके अतिरिक्त यहा कोई विशेष घटना नही हुई।

नगर

कालीकट मालाबार की राजधानी और प्रधान बन्दरगाह है। मद्रास प्रान्त में इस नगर का स्थान चौथा है। इसकी जनसंख्या लगभग ८०,००० है। यहा म्यूनिसिपैलिटी, छावनी है। यहां डिस्ट्रिक्ट जज की कचेहरी, इंजीनियर का केन्द्र स्थान नमक और आबकारी के असिस्टेण्ट कमिश्नर का दफ्तर है। यहीं पोर्ट (बन्दरगाह) का अफसर रहता है। सिक्के का दफ़्तर खजाने के डिप्टी कलक्टर के अधिकार में है। म्यूनिसिपैलिटी की देख भाल में यहां तीन अस्पताल हैं। एक चेचक का अस्पताल है। सर राम स्वामी मुदलियार अस्पताल में

बच्चों और स्त्रियों की चिकित्सा होती है। एक अस्पताल जर्मन मिशन (जो १८४८ में स्थापित हुआ था) का है। यहां एक गवर्नमेंट (व्यापारिक) स्कूल जमोरिन कालेज और दो हाई स्कूल हैं। यहां यूरेशियन स्वयं सेवकों की राइफिल रेजीमेंट का केन्द्र स्थान है। इसकी शाखायें कोचीन कनानोर और टेली-चेरी में हैं।

कालीकट नगर एक निचले चपटे स्थान पर बसा है। यहीं कल्लाई का मुहाना है। ६ मील दक्षिण की ओर बेपुर नदी के मुहाने के पास एक बड़े नगर के लिये स्थिति कहीं अधिक अच्छी है। समुद्र से प्रकाश भवन और जहाज का घाट दिखाई देता है। नगर के घर नारियल के बगीचों में छिपे हुये हैं। घर दूर दूर फैले हुये हैं। इससे नगर का क्षेत्रफल प्रायः १३ वर्ग मील है। इसकी चौड़ाई २ मील और लम्बाई समुद्र के किनारे किनारे ६ मील है। मानचीर ताल और मैदान नगर के बीच में हैं। इसके चारों ओर कलक्टर और पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट के दफ्तर हैं, मद्रास बैंक अस्पताल जर्मन मिशन हाई स्कूल और डिस्ट्रिक्ट प्रेस हैं। पास ही रेलवे स्टेशन है। दक्षिण पूर्व की ओर धनी ब्राह्मणों और नायरों के सुन्दर घर हैं। सौदागरों की गोदामें समुद्र-तट पर हैं। योरूपीय लोगों के बंगले समुद्र के सामने टीलों पर बने हैं।

बन्दरगाह अच्छा नहीं है। बड़े जहाज तट से २ मील की दूरी पर खुले समुद्र में ठहरते हैं। तट के पास मूंगे की एक छोटी दीवार है। यहां आना जहाजों के लिए भयानक है।

घाट के उत्तर-पश्चिम की ओर भी छिपी हुई चट्टानें हैं। तूफान आने पर छोटी छोटी नावें उत्तर की ओर कच्चे बांध के पास आ जाती हैं। बन्दरगाह की सुविधा न होने पर भी यहां प्रतिवर्ष २ करोड़ रुपये का सामान चढ़ता और उतरता है। खोपरा (गिरी) नारियल का तेल, जटा, काली मिर्च, कहवा (कुर्ग का) और चाय (नील गिरि का) यहां की प्रधान निर्यात हैं। मिट्टी का तेल मशीन और दूसरा पक्का माल कपड़ा यहां की आयात हैं।

कालीकट का बन्दरगाह प्राचीन समय से व्यापार के लिये प्रसिद्ध रहा है। यहां चीनी लोग, सोना, चांदी, तांबा, रेशमी कपड़ा, लौंग और दूसरा सामान लाते थे। इसे वे काली मिर्च और सोंठ आदि से बदल लेते थे। मूर अरबी लोगों ने भी यहां बहुत समय तक व्यापार किया। पुर्चगालियों के आने पर कालीकट के व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा। पुर्चगालियों और डच लोगों ने कोचीन को अपना व्यापार केन्द्र बनाया। १५१३ ईस्वी में पुर्चगालियों ने जो किला यहां बनवाया था। उसका कोई चिन्ह शेष न बचा। १६१५ में अंग्रेजों ने यहां एक गोदाम खोली। १६६७ से वे यहां स्थापित हो गये। १७०३ ई० में फ्रांसीसियों ने यहां अड्डा जमाया। उनका व्यापार सफल न हो सका। १७५२ ई० में जमोरिन ने डेनिश कम्पिनी को व्यापार करने की आज्ञा दे दी। शर्त यह थी कि वह आने जाने वाले सामान पर चुङ्गी दिया करे और आवश्यकता पड़ने पर जमोरिन गोला बारूद आदि आवश्यक सामान भी दिया करे।

४

१७८८ ई० में इस कम्पिनी के लोग भाग गये। १८१७ ई० में इनकी गोदाम अस्पताल के काम आने लगी।

कालीकट में प्राचीन भग्नावशेषों की बड़ी कमी है। मानचीर या मानविक्रम चीर में जमोरिन राजा स्नान करते थे। वेलापुर किले के स्थान पर सड़क निकल गई है। जहाँ राजा का रसोई घर था वहाँ तालाब में आज कल धोबी कपड़ा धोते हैं। यहाँ प्राचीन मन्दिर बहुत हैं। भगवती का मन्दिर रेलवे लाइन के पास एक पहाड़ी पर बना है। नगर में ४० से अधिक मस्जिदें भी हैं। यहां इसाइयों के गिरजे भी बहुत हैं।

चेवायूर—कालीकट से ३ मील उत्तर पूर्व की ओर कालीकट का एक भाग है। यहां जर्मन मिशन का कोढ़ी घर है। यहां एक गुफा में मिट्टी के बर्तन और तलवार के पुर्जे बनाये जाते हैं।

कन्नीपरम्बा कालीकट से १० मील की दूरी पर एक पुराना तीर्थ पवित्र जल का स्थान है। यहां शिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है। पशुपाद घाट की तलहटी में स्थित है। यहां थाना, डाक बंगला और होटल है। यहां पहले (१८८२ ई० में) रबर के पेड़ लगाने का प्रयोग हुआ।

बेपुर कालीकट रेलवे स्टेशन से ६ मील की दूरी पर बेपुर नदी के मुहाने पर स्थित है। समस्त मालाबार में यह पांचवां बन्दरगाह है। यहां चुंगी घर और डाक बंगला है। १७९७ में यहां आरा चलाने और १८०५ में कनवस बनाने का कारखाना खुला। यहां जहाज बनाने का भी काम आरम्भ हुआ। फिर सब कारबार बन्द हो गया। यहाँ के

नारियल, चमड़ा, तम्बाकू प्रसिद्ध निर्यात हैं। चावल, नमक और रेल की पटरी बाहर से आती हैं। यहां के खपरैल अच्छे बनते हैं। टामरसेरी नगर इसी नाम के दर्रे से ६ मील दूर है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। तीन का आरम्भ टीपू ने अपनी तोपों को लाने के लिये किया था। यहां, थाना, डाकखाना, अस्पताल और छत्रम है।

कनानोर—की जनसंख्या लगभग ३०,००० है। यह तालुके का केन्द्र स्थान और मालाबार में सब से अधिक महत्वपूर्ण सैनिक स्थान और छावनी है। यह मालाबार चौथे नम्बर का नगर और बन्दरगाह है। यहां मुंसफी, रजिस्ट्री अस्पताल, हाई स्कूल, थाना, डाक बंगला और समुद्री मार्ग से आने वाले सामान के लिये चुंगीघर है। यहां से ३ मील उत्तर की ओर सेण्ट्रल जेल है। कालाकट की अपेक्षा यहां की जलवायु अधिक शीतल है। समुद्र तट पर यह बड़ा ही रमणीक स्थान है। नगर का एक भाग पुराना शहर और दूसरा छावनी कहलाता है। दोनों के बीच में समुद्र के भीतर घुसे हुये स्थल पर सेण्ट एञ्जेलों का पुराना किला है। इस समय यहां पर प्रकाश भवन (लाइट हाउस) है। इसके दक्षिण में नारियल के बगीचे और छोटे छोटे घर हैं। यहीं (सफेद पुता हुआ) अली राजा का पुराना महल है। पास ही एक पुरानी मस्जिद है। यहीं मापला लोगों की बस्ती है। इनके घरों और दुकानों के बीच में इतनी तंग गलियां हैं कि केवल पैदल मनुष्य इन पर चल सकता है। गाड़ियों के लिये स्थान नहीं है। जिले के उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर बारकें, गिरजे, कब्रिस्तान और दफ्तर हैं। बड़े मैदान

के एक ओर बरना चारी का छोटा गांव है। अधिक उत्तर में फौजी अफसरों के बंगले हैं। रेलवे के पूर्व में दूसरा छोटा मैदान है। किला त्रिभुजाकार है और कड़ी चट्टान का बना है। स्थल की ओर खाई हैं। यह किला १५०५ ई० में पुर्चगालियों ने बनवाया था। १६६३ में यह डच लोगों के हाथ आ गया। उन्होंने १७७२ में इसे अलीराजा के हाथ बेंच दिया। १७९० ई० में इस पर ईस्ट इण्डिया कम्पिनी का अधिकार हो गया। नगर के पुराने भाग में अलीराजा का महल है। इसका प्रथम शासक आर्य कुलंगर नायर था। बारहवीं शताब्दी में यहां का मन्त्री मुसलमान हो गया। उसने अपना नाम मुहम्मद अली रक्खा। फिर भी वह अपनी योग्यता के कारण हिन्दू राजा का मन्त्री बना रहा। उसकी पांचवीं सीढ़ी में अली मूसा पैदा हुआ। उसने राजा के लिये लक्षद्वीप (लंका द्वीप) जीता। उन्हें अली राजा की उपाधि मिली। इनकी व्यापारिक नौकायें समुद्र का मथन करने लगीं। इस वंश के लोगों ने विदेशियों (डच, फ्रांसीसी और अंग्रेजों) से लोहा लिया और हैदरअली का साथ दिया। अतः १७९० ई० में अवसर पाकर कम्पिनी ने किला छीन लिया। १७९६ ई० से यहां की बीबी ने १५००० रुपया वार्षिक कर देने लगी। महल में एक दीपक सदा जलता रहता है। इनका विश्वास है कि जब तक दीपक जलता रहेगा तभी तक महल में समृद्धि रहेगी।

श्रीकन्दपुरम इस समय एक मापला गांव है। प्राचीन समय में यह मालाबार और कुर्ग के बीच में एक व्यापार-केन्द्र था। यहां थाना भी है।

तलीपरम्बा कनानोर से १४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां डिप्टी तहसीलदारका दफ्तर और मुंसफी है। यहां कई गुफायें और मन्दिर हैं।

लक्ष्मीपुरम का मन्दिर बहुत बड़ा और अलंकृत है। यहां पार्वती जी ने अवध के एक राजा को लिंग दिया था। इसी के ऊपर यहां प्रथम बार मन्दिर बनाया गया था। परशुराम जी ने इस मन्दिर की मरम्मत करवाई और इसके भीतर एक कुएँ को मणी माणिक्य से भर दिया। मन्दिर के नीचे ताल पर १५७४ का एक शिला लेख है। पास ही एक कच्चे किले के खंडहर हैं। जिसे अंग्रेजों ने २७३६ ई० में छीन लिया था। मार्च मास में यहां मेला लगता है। यहां काली मिर्च का एक बड़ा बगीचा है।

वालारपट्टनम या बलियापट्टन का एक छोटा मारला गांव बन्दरगाह और रेलवे स्टेशन है। यह कनानोर से ५ मील की दूरी पर तटीय सड़क पर इसी नाम की नदी के मुहाने पर स्थित है। यहाँ थाना और प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर बल्लभ पेरूमल ने बनवाया था। पुराने किले के भीतर कई मन्दिरों के खण्डहर हैं। मृतक राजाओं का यहीं दाह संस्कार होता था। यहीं भगवती का मन्दिर है। यहां बारह मस्जिदें भी हैं।

ब्रिटिश कोचीन (जनसंख्या २०,०००) तालुके का प्रधान नगर है। यहां डिप्टी कलक्टर और पोर्ट अफ़सर के दफ्तर हैं। यहां डाकतार घर, म्युनिसिपल अस्पताल चुंगी घर, डाक बंगला और थाना है। पुराने किले के एक भाग में प्रकाश भवन (लाइट हाउस) है। जिसका प्रकाश १२ मील की दूरी

से जहाजों को दिखाई देता है। यह नगर कोचीन नदी के मुहाने के दक्षिण में अनूप (लेगून) और समुद्र के बीच वाले तंगस्थल पर बसा है। नदी के मुहाने से उत्तर की ओर स्थित विपिन द्वीप भी इसी नगर में शामिल है। कोचीन में सबसे पहले (१५०० ई०) में योरूपीय (पुर्चगाली) उपनिवेश बना। जामोरिन से खटपट हो जाने पर उन्होंने यहीं लंगर डाले। कोचीन के राजा और जमोरिन में पुरानी शत्रुता थी। अतः पुर्चगालियों का यहां अच्छा स्वागत हुआ। उन्हें व्यापार में यहां ऐसी सुविधा मिली कि बीस दिन में उनके जहाज मसाले से भर गये। १५०२ में वास्को डिगामा ने यहां आकर राजा से व्यापार सम्बन्धी सन्धि कर ली। फिर उन्होंने यहां एक किला बनवाया। गोआ से पहले पुर्चगाली वायसराय यहीं रहता था। १५२४ में जब वास्कोडिगामा दूसरी बार यहां आया तो वह मर गया और पहले यहीं गाड़ा गया। फिर उसकी लाश पुर्चगाल को भेज दी गई। १६३४ में पुर्चगालियों की आज्ञा से अंग्रेजों ने अपनी गोदाम यहां खोली। १६६१ में डच लोगों ने विपिन द्वीप छीन लिया और वहां किला बनवाया। १६६३ में उन्होंने नगर पर भी अधिकार कर लिया और अंग्रेजों को यहां से निकाल दिया। डच लोग यहां १३२ वर्ष तक रहे। यह लोग प्रोटेस्टेण्ट इसाई थे। इन्होंने कई रोमन केथलिक गिरजे गिरवा दिये। १७९५ ई० में कोचीन पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। उन्होंने कई गिरजे और किले को तोप से उड़ा दिया। इस समय बम्बई के दक्षिण में मालाबार तट पर कोचीन का बन्दरगाह सर्व प्रथम है। यहां

३ करोड़ रुपये से ऊपर का व्यापार होता है। कोचीन से मिला हुआ मत्तनचेरी नगर है जो कोचीन राज्य में शामिल है।

मंजेरी अर्नाद तालुके का प्रधान नगर है। यहां तहसीलदार और मुंसिफ का दफ्तर है। यहीं अस्पताल छत्रम, थाना और डाकघर है। यहां से आर्यकोट, फेरोक, नीलाम्बुर और कर्कुर को सड़कें गई हैं। यहां तीन प्राचीन गुफायें हैं। दक्षिण-पूर्व की ओर एक टीले पर दुर्गा जी का मन्दिर है। मापला विद्रोह में मन्दिर की मूर्ति कई बार नष्ट की गई। नीलाम्बुर मंजेरी से १६ मील ठीक उत्तर में है। यहीं दक्षिणी मालाबार के वन विभाग का दफ्तर है। कर्कुर घाट की सड़क पर स्थित है। यहां अस्पताल, डाक बंगला, थाना और डाकखाना है। नदी के जल में मछलियां बहुत हैं। बालू में सोने के कण हैं। तिरुरंगादी कदलुन्दी नदी के किनारे पर एक मापला बाजार है। १७९० में यहां टीपू और ईस्टइण्डिया कम्पिनी से युद्ध हुआ था। मालापुरम मंजेरी से ७ मील दक्षिण की ओर एक छावनी है। टीपू ने यहां एक किला बनवाया था। छावनी से मिला हुआ मापला बाजार है।

धर्मादम या धर्म पत्तनम् द्वीप टेलीचेरी और अंजरकंडी नदियों के संगम से बना है। यह टेली चेरी नगर के ठीक उत्तर में स्थित है।

टेलीचेरी की (जन संख्या ३०,०००) है। यहां ज़िले के जज की कचहरी और उत्तरी मालाबार के रजिस्ट्रार का दफ्तर है। यहां अस्पताल कालेज और डाकबंगला है। टेलीचेरी नगर की स्थिति रमणीक और स्वास्थ्य कर है। पर पड़ोस के समुद्र में

छिपी हुई लावा की चट्टानें जहाजों के लिये बड़ी भयानक हैं। १६८३ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पिनी ने यहां अपना अड्डा बनाया। १७०८ में उन्होंने एक पहाड़ी पर अपना किला बनाया। इसके बाद यहां के अंग्रेजों ने कई लड़ाइयों में भाग लिया।

बडगारा—कोट्टा नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित है। यह एक बन्दरगाह और व्यापार केन्द्र है। यहां मुंसफी कचहरी, थाना, डाक तारघर, डाकबंगला और रेलवे स्टेशन है। अधिकतर व्यापार मापला लोगों के हाथ में है। इनका मुहल्ला बड़ा गन्दा है। डाक बंगले के पास ही पुराने किले के खंडहर हैं। यहां से तीन मील दक्षिण पूर्व की ओर एक प्राचीन मन्दिर और गुफायें हैं।

माही—इसी नाम की नदी के दक्षिणी किनारे पर फ्रांसीसियों का उपनिवेश है। इसका क्षेत्रफल २½ वर्ग मील है। नदी के मुहाने पर एक पहाड़ी के ऊपर नगर की स्थिति बड़ी सुन्दर है। यहां चार स्कूल एक अस्पताल और व्यापार केन्द्र है। यहां का गवर्नर पांडिचेरी के फ्रांसीसी गवर्नर के अधीन है पंतलाइनी मालाबार का एक ऐतिहासिक नगर है। कोलम राजा ने यहां अपनी राजधानी बनाई थी। यहां पद के आकार की एक मस्जिद-बनी है। यहां कई प्राचीन मन्दिर है।

क्विलन्दी में डिप्टी तहसीलदार और मुन्सिफ की कचहरी है। यहीं समुद्र की ओर से आने वाले माल के लिये चुंगीघर है। पहले मुसलमान यात्री यहीं से मक्का को जाते थे। यहां एक पुरानी मस्जिद है। कई हिन्दू मन्दिरों के खंडहर हैं।

मालाबार-दर्शन

पालघाट—मालाबार में दूसरे नम्बर का नगर है। यह पोनानी नदी की एक शाखा पर पहाड़ की तलहटी से ७ मील दूर है। इसकी जन संख्या लगभग ५०,००० है। यहां जज और तहसीलदार की कचहरी है। यहां अस्पताल, डाकबंगला, थाना और डाक तार घर है। यहां खप्रैल बनते हैं। १७६६ में हैदरअली ने यहां एक किला बनवाया था। १७९० में अंग्रेजों ने इस किले को छीन लिया। यहां कई मन्दिर भी हैं।

चावक्काद (चौघाट) पोनानी से १६ मील दक्षिण की ओर है। यहां डाक बंगला, आबकारी, थाना और डाक-तारघर है। यहां कई मन्दिरों के खंडहर हैं।

पोनानी इसी नाम की नदी के दक्षिणी किनारे (मुहाने) पर समुद्र-तट पर स्थित है। इसकी जनसंख्या १०,००० से ऊपर है। यहां थाना, मुंसफी बन्दरगाह और डाकघर तथा डाक-बंगला भी है। पुर्चगालियों के समय में यह मूर लोगों का अड्डा था। हैदर अली ने यहां किलेबन्दी की। टीपू और अंग्रेजों में यहां घमासान लड़ाई हुई। यहाँ मखदूम तंगल का निवास स्थान है। मालाबार के मुसलमान उसे अपना धार्मिक गुरु मानते हैं। एक बड़े ताल के किनारे त्रिकाव, का प्राचीन मन्दिर है।

तानूर मछली पकड़ने का बड़ा प्रसिद्ध अड्डा है। यहां थाना डाकघर, स्टेशन और बन्दरगाह है। तिरुवायी अपने प्राचीन मन्दिर के लिये प्रसिद्ध है। यह पोनानी नदी के उत्तरी किनारे पर बसा है।

अंगदीपुरम—अपने प्राचीन मन्दिर के लिये प्रसिद्ध है। इसके पुजारी नम्बूदरी ब्राह्मण हैं।

मानन्तोदी—टेलीचेरी से ५० मील और मैसूर राज्य की सीमा से ५ मिल दूर है। यह समुद्र-तल से २५५८ फुट ऊँचा बसा है। यहां बन-विभाग और डिप्टी कलक्टर का दफ्तर है। यहां थाना अस्पताल छत्रम और डाकघर है।

गणपतिवत्तम—मैसूर सीमा से १३ मील दूर है। यहां टीपू ने किला बनवाया था। यहां थाना और डाकघर है।

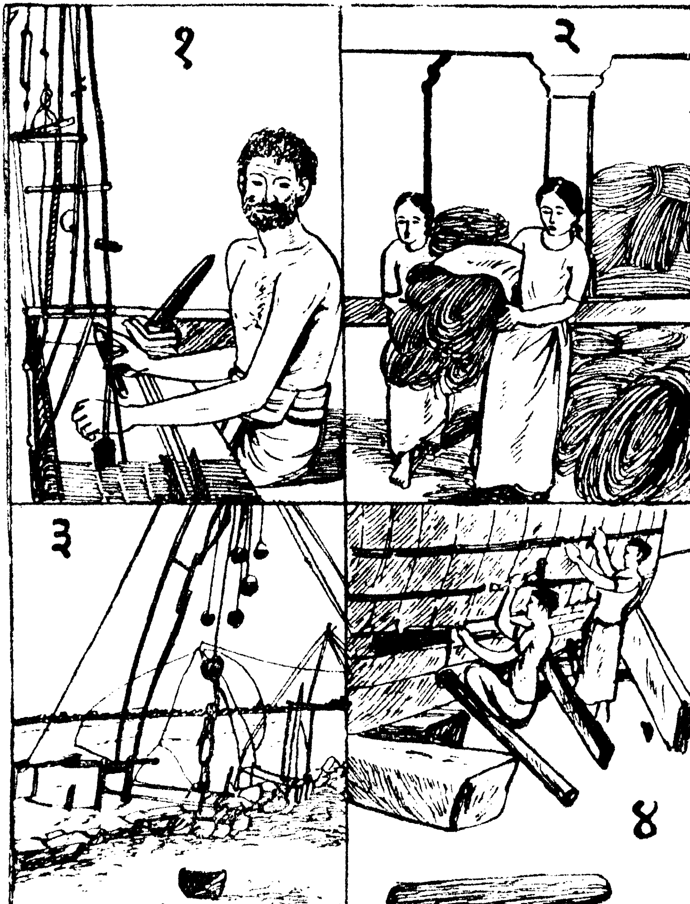
लक्ष (लंका) द्वीप

यह मूँगे का द्वीप समूह मालाबार तट के सामने ८ और १२ उत्तरी अक्षांशों और ७१ और ७४ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। उत्तर के चार द्वीप दक्षिणी कनारा के कलक्टर के अधिकार में है। दक्षिण के ४ द्वीपों पर कनात्तोर के राज-वंश का अधिकार था। फिर वे मालाबार में मिला लिये गये। एण्ड्रोत द्वीप सब से बड़ा है। यह कालीकट से १२५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह लगभग दो मील लम्बा है। इसकी जन संख्या २,३०० है। कालयेनी द्वीप कालीकट से १५० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। अगाति द्वीप कालीकट से २२० मील पश्चिम की ओर है।

मिनिकाय द्वीप कालीकट से २५० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह वास्तव में मालद्वीप का अंग है। इसकी जन-संख्या २,७०० है। सभी द्वीप प्राय: अर्द्ध चन्द्राकार हैं और मूंगे की दीवारों के बने हैं। दीवार की चौड़ाई १०० फुट से लेकर पौन मील तक है। पड़ोस के समुद्र की गहराई २० फैदम से

२०० फैदम तक है। द्वीपों का कोई भाग समुद्र-तल से दस-पन्द्रह फुट से अधिक ऊँचा नहीं है। मिट्टी की गहराई कहीं भी चार पांच फुट से अधिक नहीं है। मिट्टी भी अच्छी नहीं है। प्रधान वनस्पति नारियल है। गाय बकरी, बिल्ली, चूहा यहां के प्रधान पशु हैं। पक्षी कम हैं समुद्र में कई प्रकार की मछलियां हैं। यहां के प्रधान निवासी मापला हैं। इनमें यहां कई जातियां हैं।

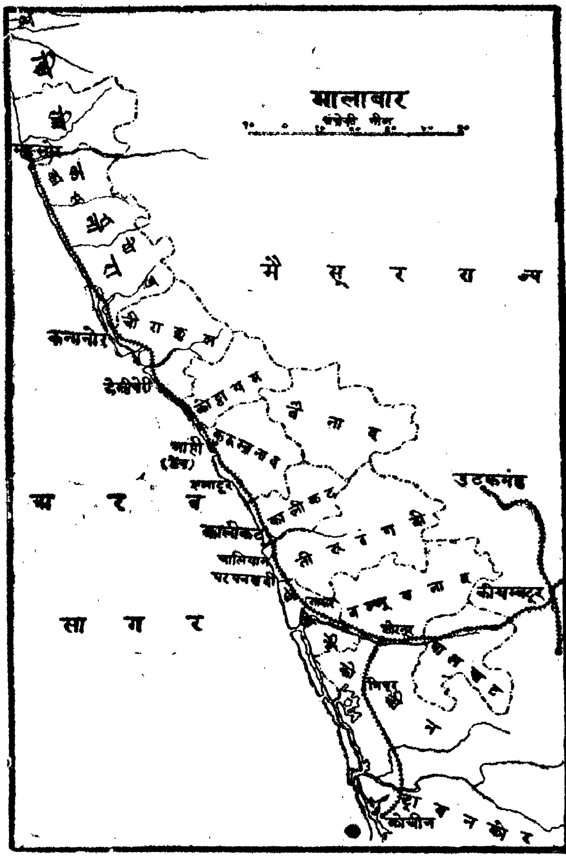
मिनीकाय द्वीप के निवासी लंका से आकर यहां बस गये थे और महल भाषा बोलते थे।



१—मालाबार का एक जुलाहा। २—रस्सों के रंगने की तयारी। ३—मछली पकड़ने के जाल। ४—नाव बनाना।



मालाबार-तट के एक गांव के बोझा ढोने वाले।


मालाबार
मैसूर राज्य
कन्नानोर
कालीकट
वैनाद
उटकमंड
कोयम्बटूर
अरब सागर
कोचीन

DESH-DARSHAN Regd. No.
December 1944.

अगले महीने (जनवरी १९४५)

में

बर्लिन

का

इसी तरह का

सचित्र वर्णन रहेगा।

यदि आप अभी तक

देश-दर्शन

के

ग्राहक नहीं बने हैं

तो

४) रु० भेज कर

एक वर्ष के लिये ग्राहक बन जाइये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.)
and Printed at the Bhugol Press, Kakrahaghat,